February
2024

Newspaper Clips

Based on

Times of India | The Hindu | Economic Times | Financial Express | The Telegraph | Deccan | The Statesman | The Tribune | The Asian Age | Aajkaal | Anandabazar Patrika | Ekdin | Sanmarg | Eisamay | Business Line | Sangbad Pratidin

Chittaranjan National Cancer Institute

Central Library

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 01.02.2024

मटर बचाए पेट के कैंसर- सन्मार्ग, 1st Feb. 2024

मटर बचाए पेट के कैंसर

मटर को किसी भी रूप में खाएं चाहे पुलाव में या सब्जी में, इसका स्वाद बहुत अच्छा होता है। मटर बहुत फायदेमंद होती है। 100 ग्राम मटर से आप 60 कैलरीज ग्रहण करते हैं। इसमें कैलरीज कम होती हैं और न्यूट्रिशंस ज्यादा। हाल ही में हुए एक अध्ययन के अनुसार मटर पेट के कैंसर को काफी हद तक कम कर देती है।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 02.02.2024

৯-১৪ বছরে জরায়ু-মুখের ক্যানসারের টিকা- আনন্দবাজার পত্রিকা, 2nd Feb. 2024

৯-১৪ বছরে জরায়ু-মুখের ক্যানসারের টিকা

শান্তনু ঘোষ

দেশে প্রতি আট মিনিটে, জরায়ু-মুখের (সার্ভাইক্যাল) ক্যানসারে আক্রান্ত এক জন মহিলার (যাঁদের একেবারে অন্তিম পর্যায়ে রোগটি ধরা পড়েছে) মৃত্যু হয়। যদিও চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, এটি একমাত্র ক্যানসার, যেটি হওয়ার আগে আভাস পাওয়া সম্ভব। তার জন্য একটি নির্দিষ্ট বয়সের পরে স্ক্রিনিং অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। এ বারে কেন্দ্রীয় বাজেটেও ওই রোগ প্রতিরোধে জোর দেওয়া হয়েছে। বৃহস্পতিবার কেন্দ্রীয় অর্থমন্ত্রী নির্মলা সীতারামন জরায়ু-মুখের ক্যানসার প্রতিরোধে ৯ থেকে ১৪ বছর বয়সের মেয়েদের প্রতিষেধক দেওয়া হবে বলে জানিয়েছেন।

ক্যানসার চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, সাধারণত অর্থনৈতিক ভাবে পিছিয়ে থাকা মহিলাদের মধ্যে জরায়ু-মুখে ক্যানসারের প্রবণতা বেশি দেখা যায়। পরিসংখ্যান বলছে, দেশে প্রতিবছর নতুন করে এক লক্ষের বেশি মহিলা ওই রোগে আক্রান্ত হন। আবার, ফি বছর ৫০ হাজারের বেশি ওই রোগে মারাও যাচ্ছেন। সেই পরিস্থিতিতে অল্প বয়সেই প্রতিষেধকে জোর দিচ্ছেন চিকিৎসকেরাও। কারণ, মহিলাদের অন্যান্য ক্যানসারের মধ্যে দ্বিতীয় স্থানে রয়েছে জরায়ু-মুখের ক্যানসার। এবং বিশ্বে এই ক্যানসারে আক্রান্তদের ২৫ শতাংশ ভারতীয়।

'এইচপিভি' বা হিউম্যান প্যাপিলোমা ভাইরাস জরায়ু-মুখের ক্যানসারের অন্যতম কারণ। অরক্ষিত সহবাসের কারণেও মহিলারা ওই ভাইরাসে সংক্রমিত হন। তবে চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, এই রোগের আভাস পাওয়ার জন্য ৩০ বছর বয়স থেকেই স্ক্রিনিং করা প্রয়োজন। একেবারে প্রথমেই ধরা পড়লে, চিকিৎসার মাধ্যমে রোগ নির্মূল করা সম্ভব। যদিও দেখা যায়, জরায়ু-মুখের ক্যানসারে আক্রান্তের ১৫ শতাংশ আসেন অস্ত্রোপচারের পর্যায়ে। আর, বাকি ৮৫ শতাংশ যখন চিকিৎসকের কাছে আসেন, তখন রেডিয়েশন একমাত্র পথ।

গাইনোকলজিক্যাল অঙ্কোলজিস্ট অরুণাভ রায় বলেন, "৯ থেকে ১৪ বছর বয়সের মধ্যে প্রতিষেধক নেওয়া মহিলাদের ওই রোগে আক্রান্ত হওয়ার সম্ভাবনা যে ৯০ শতাংশ কম, তা বিদেশে বিভিন্ন পরীক্ষায় প্রমাণিত। তবে নির্দিষ্ট বয়সের পর থেকে স্ক্রিনিং অত্যন্ত জরুরি। কিন্তু অর্থনৈতিক ভাবে পিছিয়ে থাকা মহিলাদের মধ্যে সেই সচেতনতা ততটা গড়ে ওঠেনি।" তিনি জানাচ্ছেন, ৩০ বছর থেকে শুরু করে ৬৫ বছর পর্যন্ত পাঁচ বছর অন্তর স্ক্রিনিংয়ের প্রয়োজন রয়েছে।

আগে এই প্রতিষেধক নিয়ে বিতর্ক ছিল। তা কি এখন কাটিয়ে ওঠা গিয়েছে? জরায়ু-মুখের ক্যানসার প্রতিরোধে কাজ করেছেন গাইনোকলজিক্যাল অঙ্কোলজিস্ট অসীমা মুখোপাধ্যায়। তিনি বললেন, "বিতর্কের কারণ নেই। বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থা অনেক আগেই তা সুপারিশ করেছে। বিদেশে ১০-১৫ বছর ধরে বালিকাদের তা দেওয়া হচ্ছে। তাতে পরবর্তী সময়ে মহিলাদের বড় অংশ জরায়ু-মুখের ক্যানসারের ঝুঁকি মুক্ত হয়েছেন।" তিনি আরও বলেন, "বছর আটেক আগেই দেশে জাতীয় টিকাকরণ কর্মসূচিতে এই টিকা দেওয়ার কথা বলা হয়েছে। এখন সেটা বিনামূল্যে দেওয়া হবে। স্ক্রিনিংয়েও জোর দিতে হবে।"

চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, জরায়ু-মুখের ক্যানসার প্রতিরোধে বিদেশি প্রতিষেধক ইতিমধ্যেই বাজারে রয়েছে। ৯ থেকে ১৪ বছর বয়সের ক্ষেত্রে ছ'মাস অন্তর দু'টি ডোজ় নিতে হয়। এক-একটি ডোজ়ের দাম প্রায় চার হাজার টাকা। বেশি দামেরও প্রতিষেধক রয়েছে। তবে ১৫ বছরের বেশি বয়সেও ওই প্রতিষেধক নেওয়া যায়। সে ক্ষেত্রে তিনটি ডোজ় নিতে হয়। যদিও, এখন বিভিন্ন গবেষণায় একটি ডোজ়ও কার্যকর বলে দেখা গিয়েছে বলে জানাচ্ছেন চিকিৎসেকেরা।

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 02.02.2024

सर्वाइकल कैंसर के मुफ्त टीकाकरण की डॉक्टरों ने की सराहना- सन्मार्ग, 2nd Feb. 2024

सर्वाइकल कैंसर के मुफ्त टीकाकरण की डॉक्टरों ने की सराहना

कहा - 2040 तक सर्वाइकल कैंसर मुक्त होगा देश

प्रीति यादव @sanmarg.in

कोलकाता : वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को देश का अंतरिम बजट पेश किया। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष घोषणा करते हुए सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण को बढ़ावा दिया। इसके लिए अब सरकार बाकी बीमारियों की तरह ही सर्वाइकल कैंसर के लिए टीकाकरण की शुरुआत करेगी। इसके तहत 9-14 साल की लड़कियों का मुफ्त में टीकाकरण किया जायेगा, जिससे इस कैंसर से होने वाले मामलों के साथ मृत्यु दर में गिरावट आयेगी। डॉक्टरों के अनुसार सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ता कैंसर है, जिससे हर साल लाखों महिलाओं की मौत हो रही है। देश में यह कैंसर दूसरा सबसे आम कैंसर बन कर उभर रहा है। वहीं कुछ महिलाओं का कहना है कि इस टीकाकरण की मदद से सर्वाइकल कैंसर के जोखिम को कम किया जा सकता है, जिससे आने वाले दिनों में लड़कियों को कोई खतरा नहीं होगा और एक स्वस्थ भारत का निर्माण होगा।

क्या कहना है डॉक्टरों का

मेडिका सुपरस्पेशलिटी अस्पताल के स्त्री रोग ऑन्कोलॉजी विभाग के यूनिट हेड **डॉ. अरुणाभ रॉय** ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर एक संक्रमण से होने वाला कैंसर है इसलिए वैक्सीन इसकी रोकथाम में एक महत्वपूण भूमिका निभायेगी। साथ ही किशोरावस्था में लगाया गया यह टीका सर्वाइकल कैंसर को रोकने में 90 प्रतिशत तक प्रभावी होगा। इसे किशोरावस्था यानी 9 से 14 में लगाना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यह बीमारी एक सेक्सुअली ट्रांसमिटेड इंफेक्शन है और 9 से 14 साल की उम्र की लड़कियां जिनका फिजिकल कॉन्टैक्ट में आने की संभावना अधिक होती है। ऐसे में उनके संक्रमित होने से पहले उन्हें

गुरुवार को एक इलेक्ट्रॉनिक दुकान में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को संसद में अंतरिम बजट 2024 पेश करते हुए देखते लोग

सुरक्षा देना महत्वपूर्ण है, साथ ही किशोर उम्र में दिए गए इस टीके से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है और बीमारी का खतरा नहीं होता है। अगर हर स्कूल जाने वाले 9 से 14 साल के बच्चों का टीकाकरण कर दिया जायेगा तो आने वाले साल 2040 तक यह कैंसर खत्म हो जायेगा।

सीएमआरआई के यूनिट प्रमुख **सोमब्रत रॉय** ने कहा कि 2024 का बजट हमारे स्वास्थ सेवा मिशन को बढ़ावा देगा। उन्होंने कहा कि वह सर्वाइकल कैंसर से निपटने के लिए सरकार की पहल की सराहना करते हैं। साथ ही कहा कि अतिरिक्त मेडिकल कॉलेज बनाने की सरकार की जो योजना है वह बेहद महत्वपूर्ण है, जिससे आधुनिक मेडिकल शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। हम इस राष्ट्रीय शुरुआत में भागीदार बनने के लिए तैयार हैं। इससे सभी लोगों को मेडिकल सेवाएं प्राप्त हो पायेंगी।

नारायणा हेल्थ के ग्रुप सीओओ **आर वेंकटेश** ने बजट के बाद के परिदृश्य में स्वास्थ्य सेवा पर सरकार के सक्रिय रुख की सराहना की। उनका कहना है कि युवा लड़कियों के लिए सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण को प्रोत्साहित करने, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल योजनाओं को सुव्यवस्थित करने और 'यू-विन' प्लेटफॉर्म को तेजी से लागू करना सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति समर्पित प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मणिपाल अस्पताल के चेयरमैन

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 02.02.2024

सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम को टीकाकरण को बढ़ावा देगी सरकार-सन्मार्ग, 2nd Feb. 2024

सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम को टीकाकरण को बढ़ावा देगी सरकार

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में घोषणा की कि सरकार सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए 9 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियों के टीकाकरण को प्रोत्साहित करेगी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने पिछले महीने कहा था कि वह देश में सर्वाइकल कैंसर के मामलों पर बारीकी से नजर रख रहा है और राज्यों तथा विभिन्न स्वास्थ्य विभागों के साथ नियमित संपर्क में है। सरकार ने पिछले साल मार्च में राज्यसभा को बताया था कि बीमारी के दबाव पर ताजा प्रमाण, एचपीवी टीके की एकल खुराक की प्रभावशीलता पर प्रमाण, क्लीनिकल परीक्षण के आंकड़े और टीके की शुरुआत पर सिक्किम सरकार के अनुभव के आधार पर, जून 2022 में टीकाकरण पर 'राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समूह' (एनटीएजी) ने एक सिफारिश की थी। यह सिफारिश 9 से 14 साल की किशोरियों के लिए एक बार और इसके बाद नौ साल तक नियमित रूप से एचपीवी टीकाकरण को लेकर थी। एचपीवी टीका 'ह्यूमन पेपिलोमा वायरस' (एचपीवी) के संक्रमण के कारण होने वाले कुछ कैंसर से बचाता है जिनमें सर्वाइकल कैंसर भी शामिल है। हालिया अनुमानों के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 80,000 महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर होता है और करीब 35,000 महिलाओं की इसके कारण मृत्यु हो जाती है। भारत में एचपीवी के टीके 'गर्डसिल 4' की वर्तमान में प्रति खुराक कीमत 3,927 रुपये है। उन्होंने कहा, 'मिशन इंद्रधनुष के तहत टीकाकरण प्रबंधन और इस संबंध में प्रयासों को तेज करने के लिए नवनिर्मित यू-विन प्लेटफॉर्म पर देशभर में तेजी से काम शुरू किया जाएगा।' भारत सरकार के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) को डिजिटल स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों के दो जिलों में पायलट मोड में 'यू-विन' पोर्टल संचालित किया जा रहा है।

দৈনিক স্টেটসম্যান

Date: 02.02.2024

সার্ভাইক্যাল ক্যান্সার রোধে টিকাকরণের উদ্যোগ বাজেটে-
দৈনিক স্টেটসম্যান, 2nd Feb. 2024.

সার্ভাইক্যাল ক্যান্সার রোধে টিকাকরণের উদ্যোগ বাজেটে

দিল্লি, ১ ফেব্রুয়ারি— ভারতের মেয়েদের মধ্যে ক্রমশই বাড়ছে সারভাইক্যাল ক্যান্সার। প্রায় ৯৯ শতাংশ ক্ষেত্রেই ভাইরাস সংক্রমণের ফলে এই ক্যান্সার হয়। টিকা নিলে এবং প্রতিরোধবিধি সম্পর্কে সচেতন থাকলে এই রোগটিকে নির্মূল করা যাবে বলে জানিয়েছে বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থা। চিকিৎসকদের মতে, সারভাইক্যাল ক্যান্সার নিয়ে সচেতনতা খুবই জরুরি। বিশ্ব জুড়ে এই অসুখের শিকার ২৫ শতাংশই ভারতের মানুষ। এবার কেন্দ্রের বাজেটেও উঠে এল মেয়েদের সাভাইক্যাল ক্যান্সার প্রতিরোধে টিকাকরণকে প্রাধান্য দেওয়ার ঘোষণা। বৃহস্পতিবার অন্তর্বর্তীকালীন বাজেট পেশ করতে গিয়ে অর্থমন্ত্রী নির্মলা সীতারামন ঘোষণা করেন, 'এবার থেকে সাভাইক্যাল ক্যান্সারের বিরুদ্ধে প্রতিরোধ গড়ে তুলতে সরকার ৯ থেকে ১৪ বছর বয়সি মেয়েদের টিকা গ্রহণে উৎসাহিত করবে।'

সারভাইক্যাল ক্যান্সার মূলত ছড়ায় যৌন সম্পর্কের ফলে। এছাড়াও এই ক্যান্সারের কিছু রিস্ক ফ্যাক্টর থাকে। যেমন, ধূমপান, রোগ প্রতিরোধ ক্ষমতায় ঘাটতি, ক্রনিক অসুখ, এইচআইভি, একাধিক যৌন সঙ্গী। অনেকের শরীরেই এই ভাইরাস থাকে, অনেক ক্ষেত্রে তা চলেও যায়। আবার কিছু ক্ষেত্রে শরীরে থেকে গিয়ে কোষের পরিবর্তন ঘটায়। সাধারণত ত্রিশোর্দ্ধ মহিলাদের ক্ষেত্রে এই জোরে আক্রান্ত হওয়ার সম্ভাবনা বেশি। হু এর মতে, ভারতের মোট জনসংখ্যার নিরিখে ৭০ শতাংশ মহিলার সারভাইক্যাল ক্যান্সার পরীক্ষা করানো উচিত। কারণ, স্তন, ফুসফুস এবং মলাশয়ের ক্যান্সারের পর, সাভাইক্যাল ক্যান্সারে আক্রান্তের সংখ্যা সবচেয়ে বেশি। বৃহস্পতিবার কেন্দ্রীয় বাজেটে ৯ থেকে ১৪ বছর বয়সের মেয়েদের টিকা দেওয়ার বিষয়ে উদ্যোগী হয়েছে কেন্দ্র।

তবে কবে থেকে এই টিকাকরণ কর্মসূচি শুরু হবে, টিকা দেওয়ার ক্ষেত্রে কী পদ্ধতি অবলম্বন করা হবে সেসব বিষয়ে এদিন বিস্তারিত কিছু বলেননি নির্মলা সীতারমন। তবে বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থার সতর্কতার পর উদ্বিগ্ন কেন্দ্রীয় সরকার এ ব্যাপারে দ্রুত ব্যবস্থা নিতে উদ্যোগী হয়েছে। তারই প্রতিফলন ঘটেছে অন্তর্বর্তী বাজেটে।

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 03.02.2024

कोलकाता के कुछ अस्पतालों ने चालू की सर्वाइकल टीकाकरण की प्रक्रिया-सन्मार्ग, 3rd Feb. 2024

कोलकाता के कुछ अस्पतालों ने चालू की सर्वाइकल टीकाकरण की प्रक्रिया

प्रीति यादव@sanmarg.in

कोलकाता : मॉडल और बॉलीवुड एक्ट्रेस पूनम पांडेय का शुक्रवार को सर्वाइकल कैंसर के कारण महज 32 की उम्र में निधन हो गया। मालूम हो कि इन दिनों सर्वाइकल कैंसर के कारण महिलाओं की मृत्यु दर में 25 % तक की बढ़ोतरी हुई और हर साल लगभग लाखों महिलाओं की मौत इस कैंसर के कारण हो रही है। बता दें कि गत दिनों इन कैंसर के बढ़ते मामलों को देखते हुए ही बजट के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा 9 से 14 साल के बच्चों को मुफ्त में सर्वाइकल कैंसर के टीकाकरण की घोषणा की गयी, जो स्वस्थ भारत के निर्माण के क्षेत्र में बड़ी पहल है। वहीं इस संबंध में कुछ डॉक्टरों का मानना है कि इस बीमारी के बढ़ने का एक कारण यह भी है कि इसके लक्षण देर से नजर आते और महिलाओं में जागरूकता का अभाव भी इस कैंसर को बढ़ावा दे रहा है। इस संबंध में **नारायणा हॉस्पिटल हावड़ा** की ओर से बताया गया कि सर्वाइकल कैंसर के कारण मॉडल पूनम पांडे की दुखद मृत्यु के मद्देनजर हॉस्पिटल की ओर से ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने का संकल्प लिया गया है। उनकी संयुक्त पहल का लक्ष्य 9-14 वर्ष की आयु की 2000 लड़कियों को ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एचपीवी) के खिलाफ टीकाकरण करना और बाद की परियोजनाओं में वंचित समुदायों तक इन प्रयासों का विस्तार करना है। वहीं नारायणा हॉस्पिटल, हावड़ा के गायनोकोलॉजिकल ऑन्कोलॉजी और रोबोटिक सर्जरी के वरिष्ठ सलाहकार **डॉ. कौस्तव बसु** ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर को रोकने में एचपीवी टीकाकरण की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया जाये। उन्होंने सर्वाइकल कैंसर की जांच के बारे में जागरूकता बढ़ाने, शीघ्र पता लगाने के लिए पीएपी स्मीयर और कोल्पोस्कोपी जैसे विशिष्ट परीक्षणों पर प्रकाश डालने और कैंसर की शीघ्र पहचान होने पर जीवित रहने की दर में उल्लेखनीय सुधार लाने के महत्व पर जोर दिया। वहीं मणिपाल अस्पताल के स्त्री रोग ऑन्कोलॉजिस्ट **डॉ. मानस चक्रवर्ती** ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण को बड़े स्तर पर शुरू करना एक सकारात्मक कदम है। संभव है कि सरकार के हस्तक्षेप से लोगों को जमीनी स्तर पर टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। उन्होंने कहा कि इस टीकाकरण के बारे में जागरूकता बढ़ायी जाये ताकि महिलाओं को अपनी जान न गंवानी पड़े।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 04.02.2024

অনূর্ধ্ব ৩০ মহিলাদের থাইরয়েড ক্যান্সারের হার বেড়েছে ১২১ শতাংশ- আনন্দবাজার পত্রিকা, 4th Feb. 2024

অনূর্ধ্ব ৩০ মহিলাদের থাইরয়েড ক্যান্সারের হার বেড়েছে ১২১ শতাংশ

ড. শৌভনিক শতপথী,
এমবিবিএস (অনার্স),
এমএস (ইএনটি)
ক্লিনিক্যাল লিড এবং সিনিয়র কনসালটেন্ট
ইএনটি, হেড নেক সার্জারি এবং অনকোলজি
পিয়ারলেস হাসপাতাল

পরামর্শে পিয়ারলেস হাসপাতাল অ্যান্ড বিকে রায় রিসার্চ সেন্টারের হেড অ্যান্ড নেক সার্জেন ডাঃ শৌভনিক শতপথী

ভারতে নিঃশব্দে মহিলাদের মধ্যে বেড়ে চলেছে থাইরয়েড ক্যান্সার। এক সমীক্ষা অনুসারে ৩০ বছরের কম বয়সি মহিলাদের মধ্যে থাইরয়েড ম্যালিগন্যান্সির হার বেড়েছে প্রায় ১২১ শতাংশ। ৩০ থেকে ৪৪ বছর বয়সি মহিলাদের মধ্যে এই বৃদ্ধির হার ১০৭ শতাংশ!

কেন বাড়ছে থাইরয়েড ক্যান্সার? নির্দিষ্ট কারণ জানা যায়নি। তবে কতকগুলি বিষয় ঘিরে চিন্তা বাড়ছে— অলস জীবন যাপন, অল্প বয়স থেকে জাঙ্ক ফুড খাওয়ার কুঅভ্যেস, অতিরিক্ত ওজন ইত্যাদি। আধুনিক সময়ে শিশুদের নানা অসুখে সিটি স্ক্যান, এক্স-রে এত বেশি হচ্ছে যে তারা শৈশবে রেডিয়েশনের কবলে পড়ছে অনেক বেশি। যার কুপ্রভাবে বড় হওয়ার পর থাইরয়েড গ্ল্যান্ডের জটিলতা দেখা দেওয়ার আশঙ্কা বাড়ছে। আয়োডিনযুক্ত লবণ খাওয়ার অভ্যেস যা সম্ভবত আয়োডিন-থাইরয়েড ডিজঅর্ডার বাড়িয়ে দিচ্ছে কারও কারও ক্ষেত্রে।

ইতিবাচক দিক থাইরয়েড ক্যান্সার প্রাথমিক পর্যায়ে ধরা পড়লে, রোগ সেরে যাওয়ার সম্ভাবনা একশো শতাংশ! এমনকী অসুখ ছড়িয়ে পড়লেও একটা পর্যায় পর্যন্ত তারও চিকিৎসা আছে। মোট কথা এই ব্যাধিতে প্রাণহানি রোধ সম্ভব। থাইরয়েড গ্রন্থিটি দেখতে অনেকটা প্রজাপতির মতো। অবস্থান অ্যাডামস আপেলের নীচে এবং শ্বাসনালীর সামনে। এই গ্রন্থি থেকে থাইরক্সিন হর্মোন বেরয় যা বিপাকক্রিয়া নিয়ন্ত্রণের পাশাপাশি হার্টের স্বাস্থ্য, হাড়ের জোর, পেশির বৃদ্ধি, মস্তিষ্কের বিকাশ সহ আরও নানা বিষয় নিয়ন্ত্রণ করে।

ক্যান্সারের লক্ষণ গলার সামনের দিকে ফোলা অংশ তৈরি হয়। কোনও ব্যথা যন্ত্রণা থাকে না। ফোলাভাব ধীরে ধীরে বড় হতে থাকে। এমন উপসর্গে বুঝতে হবে সমস্যাটি থাইরয়েড টিউমারের! এমন ক্ষেত্রে একজন হেড অ্যান্ড নেক সার্জেনের কাছে গিয়ে নিতে হবে মতামত।

রোগীর ক্লিনিক্যাল একজামিনেশনে চিকিৎসকের ক্যান্সার সন্দেহ হলে, তিনি তিনটি পরীক্ষা করাতে দিতে পারেন— থাইরয়েড ফাংশন টেস্ট, আলট্রাসোনোগ্রাফি ও আলট্রাসোনোগ্রাফি গাইডেড এফএনএসি। টেস্ট রিপোর্টে ক্যান্সার সম্পর্কে নিশ্চিত হলে অপারেশন করে থাইরয়েড গ্ল্যান্ড বাদ দেওয়া হয়। এরপর প্রয়োজন হলে রেডিও আয়োডিন অ্যাবলেশন থেরাপি করতে হয়, যেক্ষেত্রে রোগীকে খেতে হয় বিশেষ তরল ওষুধ। এই ওষুধ রক্তে কোনও ক্যান্সারের কোষ বেঁচে থাকলে তাকে ধ্বংস করে। রোগী সুস্থ হন ও অকালে প্রাণহানি রোধ হয়।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 04.02.2024

বিশ্ব ক্যান্সার দিবস -আনন্দবাজার পত্রিকা, 4th Feb. 2024

বিশ্ব ক্যান্সার দিবস

২০২৪ সালের ৪ঠা ফেব্রুয়ারি ক্যান্সার সম্পর্কে সচেতনতা বাড়াতে এবং রোগটির প্রতিরোধ, শনাক্তকরণ ও চিকিৎসায় উৎসাহিত করার জন্য এই দিনটিকে আন্তর্জাতিক ক্যান্সার দিবস হিসাবে পালন করা হয়। ক্যান্সারের মতো মারণ রোগের বিরুদ্ধে আমরা লড়াই করতে পারি, শুধু দরকার নিজেদের সচেতনতা।

প্রাথমিক অবস্থায় ক্যান্সার নির্ণয় করার সাথে সাথে সচেতনতা বাড়ানোর উদ্দেশ্যে, নেতাজী সুভাষ চন্দ্র বোস ক্যান্সার হাসপাতাল কলকাতার সোনাগাছি এলাকায় সম্পূর্ণ বিনামূল্যে ক্যান্সার চিহ্নিতকরণ পরীক্ষার পাশাপাশি সারভাইক্যাল ক্যান্সার, স্তন ক্যান্সার, মুখগহ্বর ক্যান্সার পরীক্ষাগুলোও সম্পূর্ণ বিনামূল্যে করবে।

ভারতবর্ষে সারভাইক্যাল বা জরায়ু মুখের ক্যান্সারের সমস্যাটি এত বিশাল ও গভীর যে ব্যাপক আকারে এই ধরনের শিবিরের প্রয়োজন। বিশেষ করে যৌনকর্মীদের মধ্যে জরায়ুমুখ ক্যান্সারের প্রবণতা বেশি হতে পারে বলে এই ধরনের শিবিরের খুব প্রয়োজন।

নেতাজী সুভাষ চন্দ্র বোস ক্যান্সার হাসপাতাল কর্তৃপক্ষ জানাচ্ছেন যে, তারা রোটারী অভন্যাকে সঙ্গে নিয়ে এই কর্মসূচির আয়োজন করেছে "ওয়ার্ল্ড ক্যান্সার ডে"-তে।

সমস্ত যৌনকর্মী মহিলাই এই শিবিরে অংশগ্রহণ করতে পারবেন।

যে সকল মহিলার জরায়ু বাদ দেওয়া হয়েছে তাদের জন্যও এই পরীক্ষাটির বিশেষ প্রয়োজন। কারণ অস্ত্রোপচারের সাহায্যে জরায়ু বাদ দিলেও যোনির একটি অংশ থেকে যায় এবং এর উপর দিকের অংশে ক্যান্সার হতে পারে।

সঠিকভাবে রোগ নির্ণয় জরায়ুমুখ ক্যান্সারের ক্ষেত্রে যেমন জরুরি ঠিক তেমনই স্তন ক্যান্সার ও মুখগহ্বর ক্যান্সার রোগ নির্ণয়ও খুবই জরুরি। আমাদের হাসপাতালের অভিজ্ঞ ক্যান্সার চিকিৎসকরা কল্পোস্কোপি নামক একটি যন্ত্রের সাহায্যে বিনামূল্যে জরায়ুমুখ পরীক্ষা করবেন এবং সন্দেহজনক কিছু দেখলে 'প্যাপস্মিয়ার' পরীক্ষাও করবেন বিনামূল্যে। এই শিবির থেকে যদি কোনও জরায়ুমুখ, স্তন ক্যান্সার বা মুখগহ্বর ক্যান্সারের রোগী নির্ণীত হন তাহলে আমাদের হাসপাতাল তাকে বিনামূল্যে চিকিৎসা পরিষেবা দেবে।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 04.02.2024

স্তন ক্যানসার জানুন, পরিবারকে সুরক্ষিত করুন-আনন্দবাজার পত্রিকা, 4th Feb. 2024

স্তন ক্যানসার
জানুন, পরিবারকে সুরক্ষিত করুন

সঞ্জীব আচার্য্য
কর্ণধার, সেরাম গ্রুপ
মোঃ ৯৮৩০০ ১২১৫৪

ক্যানসার শব্দের সঙ্গে মৃত্যু যেন ওতপ্রোতভাবে জড়িত। বর্তমানে আধুনিক চিকিৎসা ব্যবস্থায়, প্রাথমিক পর্যায়ে ক্যানসার রোগ নির্ধারণ করা গেলে তা নিরাময় করা সম্ভব। একথা বলা যেতে পারে, Immunohisto chemistry-র মধ্যে দিয়ে চিকিৎসা প্রোটোকলকে মাথায় রেখে তদানুযায়ী চিকিৎসার বন্দোবস্ত করা হলে এই রোগ সারানো সম্ভব। কিন্তু সবটাই নির্ভর করে ক্যানসারের stage-এর ওপর। আলোচ্য বিষয়সূচির অন্যতম প্রতিপাদ্য বিষয় হল স্তন ক্যানসার (Breast Cancer)।

স্তন ক্যানসারের ঝুঁকির বিষয়গুলো:
বহুবিধ কারণে স্তন ক্যানসার (Breast Cancer) হওয়ার ঝুঁকি থাকে। এদের মধ্যে প্রধান কারণগুলো হল, বংশগতানুক্রমিক (Heredity), জেনেটিক প্রবণতা (Genetic Predisposition), হরমোনজনিত কারণ (Hormonal irregularities) এবং ফাস্ট ফুড (Diet)। স্তন ক্যানসারের বিষয়ে প্রধানত পারিবারিক ইতিহাস বিশেষ করে মায়ের দিক থেকে ইতিহাসটা বিশেষভাবে পর্যালোচনা করা প্রয়োজন।

ঝুঁকি বৃদ্ধির বিষয়গুলো:
(১) BRCA1 এবং BRCA2 জিনের মিউটেশন রিপোর্ট যদি Positive থাকে তবে স্তন (Breast) ক্যানসারের সম্ভাবনা বৃদ্ধি পায়। (২) প্রারম্ভিক প্রিরিয়ড (Early menarche) অর্থাৎ ১২ বছরের নীচে যদি পিরিয়ড শুরু হয় তবে স্তন ক্যানসারের (Breast Cancer)–এর প্রবণতা বাড়ে। (৩) দেহে ইস্ট্রোজেনের মাত্রা (Estrogen level) বৃদ্ধি পেলে স্তন ক্যানসারের (Breast Cancer)-এর প্রবণতা বৃদ্ধি পায়। ইস্ট্রোজেনের উৎপাদন দেহের অভ্যন্তরে যেমন বিদ্যমান তেমনই বাইরে থেকেও আমরা ইস্ট্রোজেন গ্রহণ করছি। যেমন নিজেকে সুশ্রী রাখতে অনেকেই HRT (Hormone replacement therapy) করান। সেক্ষেত্রে বাইরে থেকে দেহের অভ্যন্তরে অতিরিক্ত ইস্ট্রোজেন প্রবেশ করছে, যা স্তন সহ অন্যান্য ক্যানসারের ঝুঁকি বৃদ্ধিতে সাহায্য করছে। (৪) ধূমপান এবং মদ্যপান স্তন ক্যানসারের ঝুঁকি বৃদ্ধি করে। (৫) বেশি বয়সে অর্থাৎ বিলম্বে বিবাহ এবং সন্তান ধারণ স্তন ক্যানসারের (breast cancer) প্রবণতাকে বৃদ্ধি করে। (৬) লেট মেনোপজেও স্তন ক্যানসারের (breast cancer) ঝুঁকি থেকে যায়।

ঝুঁকি কমার বিষয়গুলো:
(১) ৩৫ বছর বয়সের আগে অপারেশনের মাধ্যমে oophorectomy করে ডিম্বাশয় (ovary) বাদ দিলে স্তন ক্যানসারের প্রবণতা হ্রাস পায়। কারণ oophorectomy-র ফলে দেহে ইস্ট্রোজেনের উৎপাদন কমে যায়। সাথে সাথে স্তন ক্যানসারের প্রবণতাও কমে। (২) ২০ বছরের মধ্যে প্রথম সন্তান গ্রহণ করলে স্তন ক্যানসারের (breast cancer) –এর প্রবণতা কমে। (৩) ব্রেস্ট ফিডিং স্তন ক্যানসারের (breast cancer)-এর সম্ভাবনাকে কমাতে সাহায্য করে।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 04.02.2024

ক্যানসার রোগীর 'কেয়ারগিভারের' মনের যত্ন নিয়ে ভাবনা শুরু-আনন্দবাজার পত্রিকা, 4th Feb. 2024

ক্যানসার রোগীর ‘কেয়ারগিভারের’ মনের যত্ন নিয়ে ভাবনা শুরু

জয়তী রাহা

আধার যত ভাল হবে, তার ভিতরের জিনিসও ততটাই সুরক্ষিত থাকবে। অতএব আধারটির প্রতি যত্নবান হতে হবে।

ক্যানসার চিকিৎসায় রোগীর সঙ্গী কেয়ারগিভার বা মুখ্য কেয়ারগিভারের মানসিক স্বাস্থ্য প্রসঙ্গে কথা শুরু করতেই এ কথা বলছিলেন এক মনোরোগ চিকিৎসক। ‘‘আজ, ৪ ফেব্রুয়ারি বিশ্ব ক্যানসার দিবস— মনে রাখতে হবে ক্যানসার মানেই জীবনের শেষ নয়। প্রিয়জন ক্যানসার আক্রান্ত হলে তাঁর দ্বিতীয় ইনিংস শুরু হল ভাবুন। আপনার ভালবাসার মানুষটির ক্যানসার হয়েছে, এমন খবরে ভারী হয়ে যায় ঘরের বাতাস। যেন শিয়রে কড়া নাড়ছে রোগ। তা না করে বরং যথাযথ চিকিৎসা করানোর এবং প্রতিটা মুহূর্ত আনন্দ করে বাঁচার জেদ ধরতে হবে।’’

যেমন ধরেছিলেন স্কুলশিক্ষিকা দেবযানী বসু। দশ বছর আগে হজকিন’স লিম্ফোমায় আক্রান্ত হয়েছিলেন। দীর্ঘ চিকিৎসার পর্ব মিটিয়ে অস্থিমজ্জার প্রতিস্থাপনের শেষে এখন সুস্থ তিনি। রোগ যখন ধরা পড়ে তখন দেড় বছরের যমজ বাচ্চা নিয়ে মা-বাবার সঙ্গে থাকতেন দেবযানী। প্রথম দিন ডাক্তারকে প্রশ্ন করেছিলেন, বাঁচার আশা কতটা? জেনেছিলেন, ৮০ শতাংশ। ব্যস, আর কাউকে প্রশ্ন করেননি। এক বারও ভাবেননি, হয়তো বাঁচব না। নিজেই রোগী, আবার নিজেই কেয়ারগিভার। ‘‘ছোট থেকেই লড়াই করেছি। আরামের জীবন ছিল না। তাই ভিতর থেকেই শক্ত আমি। এটা সবার হয় না। এখনও নানা ভাবে ক্যানসার আক্রান্ত কেউ পরামর্শ চাইলে পাশে থাকি। দেখেছি, কেয়ারগিভারের যন্ত্রণা। নিজেই হয়তো তিনি অসুস্থ। জিনিসের বোঝা টানতে হচ্ছে তাঁকেই। কিংবা লোকবলের অভাবে রোগীর সঙ্গে থাকতে বাধ্য হচ্ছেন, চাকরির ক্ষতি বুঝেও। এ ছাড়া মনের যন্ত্রণা তো আছেই।’’

শহরের একটি ক্যানসার হাসপাতালের সঙ্গে যুক্ত মনোরোগ চিকিৎসক সৌমিত্রশঙ্কর দত্ত বললেন, ‘‘কেয়ারগিভার হলেন অনেকটা পাত্র বা আধারের মতো। হাসপাতালে রোগীর সঙ্গে থেকে তাঁকে দেখাশোনা করার প্রশিক্ষণ হাতেকলমে নেন, বাড়ি ফিরে তাঁকে আগলে রাখেন। কিন্তু কেয়ারগিভারের মনও আগলে রাখা দরকার। কারণ, আধার ভাল থাকলে তবেই তাঁর সঙ্গে থাকা রোগীর মন ভাল থাকবে।’’

বিদেশে যেমন রোগীর ব্যক্তিসত্তাকে প্রাধান্য দেওয়া হয়, এ দেশে কেয়ারগিভারের মতামতও গুরুত্ব পায়। সামাজিক অবস্থার পরিপ্রেক্ষিতে ভারতে কেয়ারগিভারের ভূমিকা অনেকটাই বেশি। সৌমিত্রের কথায়, ‘‘হাসপাতালে ভর্তি রোগীর সঙ্গে থাকা মানুষটিকে যখন বলি, আপনি কেমন আছেন? আপনার ওষুধ এনেছেন? সে সব খাচ্ছেন তো ঠিক করে? রোগীর দেখাশোনা করতে আপনাকে সুস্থ থাকতে হবে। তখন দৃষ্টিতে দেখেছি, ভরসা।’’

ক্যানসার রোগীর পরিজনদের নিয়ে কাজ করছেন মনোবিদ অরুণিমা দত্ত। শহরের একটি বেসরকারি হাসপাতালের ক্যানসার ইউনিটের সঙ্গে যুক্ত তিনি। তাঁর কথায়, রোগীর চিকিৎসার সিদ্ধান্তে জড়িয়ে থাকেন কেয়ারগিভার। তাঁকে ভারাক্রান্ত করলে আসল কাজটাই ঠিক হবে না। পরিবারের সিদ্ধান্তে এবং দায়িত্বে রোগাক্রান্ত মানুষটিকেও জড়িয়ে রাখতে হবে। বাড়িতে কী রান্না হবে, বাজার থেকে কী কিনবেন, তাঁকে জিজ্ঞেস করুন। তাঁর সঙ্গে গল্প করুন। তাঁর ভাল লাগার কোনও কাজ করতে সুযোগ দিন। অরুণিমা বলছেন, ‘‘তা হলে রোগী নিজেকে একঘরে ভেবে বোঝা মনে করবেন না। এ ভাবে কাজ ভাগাভাগি হলে ভাল থাকবে কেয়ারগিভারের মনও। উপায় না থাকলে রোগীকে অল্প সময়ের জন্য একা রেখে নিজের কাজ সারতে হবে তাঁকে। দিনে এক ঘণ্টা হলেও সম্পূর্ণ নিজের সঙ্গে কাটান।’’

মেডিকা সুপারস্পেশ্যালিটি হাসপাতালের ক্যানসার ইউনিট সম্প্রতি এই দিকটা নিয়ে ভাবতে শুরু করেছে। এখানে কেয়ারগিভারদের বিনামূল্যে মানসিক স্বাস্থ্যের পরামর্শ দেওয়া হয়। ১৭৫ জন কেয়ারগিভারের মধ্যে সমীক্ষা চালিয়েছে তারা। গত তিন মাসের প্রাথমিক ফলাফলে দেখা গিয়েছে, কেয়ারগিভার মানসিক সাপোর্ট পেলে তাঁর এবং রোগীর জীবনযাত্রার মান উন্নত হয়। ওই হাসপাতালের ক্যানসার চিকিৎসক সুবীর গঙ্গোপাধ্যায় বলেন, ‘‘কেয়ারগিভারদের মানসিক স্বাস্থ্য নিয়ে কখনও ভাবা হয়নি। সেই কাজ শুরু হয়েছে। সর্বস্তরে আরও বিস্তৃত করতে হবে সেই কাজের পরিধি।’’

একটি স্বেচ্ছাসেবী সংস্থার কলকাতা শাখার দায়িত্বে রয়েছেন শম্পা চৌধুরী। তিনি বলেন, ‘‘শিশু ক্যানসার রোগীর পরিবারকে নিয়ে আমরা কাজ করি। দীর্ঘ মাস ধরে বহু রোগীর চিকিৎসা চলে। তখন তার বাবা-মাকে সঙ্গে থাকতে হয়। সেই সময়ে নিখরচায় তাঁদের থাকা-খাওয়ার পাশাপাশি মানসিক স্বাস্থ্য, রোগীকে দেখাশোনার প্রশিক্ষণ, পেশার জন্য নানা ধরনের প্রশিক্ষণ দেওয়া হয় কেয়ারগিভারদের। সবটাই বিনামূল্যে। যাতে কিছু কাজ শিখে পরে অর্থ উপার্জন করা যায় এবং রোগের চিন্তার বাইরে মনকে ব্যস্ত রাখা যায়।’’

তবে এই ধরনের কাজ বা ভাবনা আরও অনেক বেশি এবং বিস্তৃত করার প্রয়োজনের কথা মানছেন দেবযানী, অরুণিমারা।

The Statesman

Date: 04.02.2024

Cancer cases on rise in Bengal: Regional stats- The Statesman, 4th Feb. 2024

Cancer cases on rise in Bengal: Regional stats

STATESMAN NEWS SERVICE
KOLKATA, 3 FEBRUARY

In the wake of the escalating global cancer crisis, India finds itself grappling with a significant rise in cancer cases, painting a grim picture of the healthcare landscape. According to recent data, cancer claimed the lives of approximately 9.6 to 10 million people worldwide in 2023, averaging a staggering 26,300 deaths daily. Within India, the situation is equally distressing, with an estimated one in every nine individuals at risk of developing cancer at some point in their lives.

The state of Uttar Pradesh, located in northern India, reported the highest number of new cancer cases in 2023, recording around 2.10 lakh cases. Maharashtra followed closely with approximately 1.21 lakh new cases, and West Bengal secured the third-highest position with an estimated 1.13 lakh new cancer cases.

Dr Suman Mallik, clinical director, HOD radiation oncology, Narayana Hospital Howrah, said, "The rise in cancer cases is a matter of great concern, emphasizing the need for early detection, preventive measures, and improved access to quality healthcare. In Bengal and Kolkata, the surge in lung cancer cases is alarming, while head and neck cancer cases are on the decline. Gastrointestinal cancers are on the rise, possibly linked to lifestyle changes, inactivity, and the consumption of high-calorie foods. Notably, breast cancer has become the most frequent malignancy among females in the state."

The urgency is underscored by alarming statistics, particularly the surge in breast cancer cases among women. The disconcerting reality is that 75-80 per cent of cancer patients seek diagnosis and treatment only at advanced stages, with a meager 29 per cent detection rate nationwide. According to a 2023 study, 85 per cent of breast, lung, and cervical cancers remain undetected in Stage 1, therefore experts emphasize early detection in preventing avoidable deaths.

Dr Gautam Mukhopadhyay, clinical lead, surgical oncology, Narayana Hospital RN Tagore Hospital, Mukundapur said, "The available screening methods are not adequately utilized by the population. Efforts should be made to understand the gaps in service delivery and utilization, shedding light on people's attitudes towards screening practices. The remedy lies in increasing awareness and harnessing clinical breakthroughs, exemplified by advanced treatments."

In response to alarming cancer trends, hospitals call for concerted efforts in raising awareness, proactive practices, promoting early detection, and ensuring that screening resources are accessible to all. As the numbers project a 12.8 per cent rise in annual cancer cases by 2025, urgent action is required to curb the increasing burden on the healthcare system.

Dr Atul Raut, radiation oncologist, Desun Hospitals, said, "The alarming surge in cancer cases, especially the rise in breast cancer among women and head and neck cancer among men demands urgent attention. Our focus must be on improving the dismal detection rates and ensuring that individuals are diagnosed and treated at earlier stages."

The Statesman Sun, 04 February 2024
https://epaper.thestatesman.com/c/74493622

The Statesman

Date: 04.02.2024

Call to expand cancer care to district, village levels- The Statesman, 4th Feb. 2024

Call to expand cancer care to district, village levels

AGENCIES
HYDERABAD, 3 FEBRUARY

There is revolution in cancer care like many advances in technology, updated guidelines, and integrated work leading to better results. But this is confined to metropolitan cities and at the district and village level cancer care needs to be streamlined, say oncologists on the eve of World Cancer Day.

Every year, cancer day is observed to bring awareness to the public about cancer, its risks, early diagnosis facilities and educating people about the various types of cancer.

The theme for this year is "Closing the Care Gap" which focuses on reducing the cancer burden and improving the care facilities. Cancer is the deadly disease where any tissues or body parts can be affected and cells grow uncontrollably and abnormally and spread to other parts of the body.

It is the second leading cause of deaths in the world and has the ability to destroy normal tissues.

Although it is possible to live long with cancer, it is important to be diagnosed first and determine the suitable treatment patterns that can help reduce the growth of cancer cells, say oncologists.

The year 2022 recorded 20 million new cancer cases and 10 million deaths.

Cancer can be prevented and controlled by implementing evidence-based strategies for cancer prevention.

Treatments for cancer have a high impact on the patient's economic and social constraints.

The cancer burden can increase by 60 per cent in the next two decades if the healthcare system strains people and communities.

It is estimated that by 2040, there will be a 57 per cent increase in cancer and approximately 6.23 million new cases if no further action is taken.

It is estimated that by 2040, there will be a 57 per cent increase in cancer and approximately 6.23 million new cases if no further action is taken.

Dr. Madhu Devarasetty, Sr. Consultant - Surgical Oncologist & Minimal Invasive Surgeon, KIMS Hospitals stressed the need for establishing more cancer care centers at the district level and recruiting more specialists.

"It's very important to know that most cancers are curable if they are detected early in breast cancer, Thyroid cancer, colorectal cancer, etc. Awareness in society and standardization of treatment will enable us to close the care gap. Prevention plays a vital role in cancer care, that is modification of risk factors. One third of total cancers can be prevented and this will save thousands of lives," he said.

The oncologist believes that access to correct and concise information and knowledge about cancer can empower communities to conquer the social stigma.

"Palliative care is essential for comfort in advanced cancers and it's a crucial part of integrated cancer care services. Last but not least is psychological counseling which builds the mental strength of the patient to develop a positive attitude and helps the patient to take treatment completely," Dr. B. Kishore Reddy, Chief Ortho Oncologist, Amor Hospitals says that it is important to have equal access to quality care.

"It is one of the goals for World Cancer Day where research and efforts are made to support the development of new treatments, increasing the accessibility of the treatments, and encouraging research on a global scale. This can involve teamwork from healthcare organisations, advocacy groups and individuals who work to overcome the challenges caused by cancer. It is a complex disease with various risks and challenges. To tackle this, healthcare organisations, policymakers, researchers and communities must work together. With a focus to serve the underserved communities, it requires breaking down barriers that are restricting people to have access to quality treatment.

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 05.02.2024

अब बिना कीमो कैंसर चिकित्सा, भारत बना पहला देश -सन्मार्ग, 5th Feb. 2024

अब बिना कीमो कैंसर चिकित्सा, भारत बना पहला देश

चंडीगढ़ : पीजीआई, चंडीगढ़ के विशेषज्ञों ने अब बिना कीमो दिए कैंसर का इलाज ढूंढ निकाला है। पिछले 15 वर्षों से पीजीआई में चले शोध के बाद यह कामयाबी हासिल हुई है। पीजीआई, चंडीगढ़ के हेमेटोलॉजी विभाग के विशेषज्ञों ने एक्यूट प्रोमाइलोसाइटिक ल्यूकेमिया के मरीजों को बिना कीमो दिए पूरी तरह से ठीक कर दिया है। दावा है कि पीजीआई की इस उपलब्धि से भारत विश्व में बिना कीमो थैरेपी के कैंसर का इलाज करने वाला पहला देश बन गया है। पीजीआई के इस शोध को ब्रिटिश जर्नल ऑफ हेमेटोलॉजी में प्रकाशित किया गया है। पीजीआई के हेमेटोलॉजी विभाग के प्रमुख व शोध के वरिष्ठ लेखक प्रो. पंकज मल्होत्रा के मुताबिक इस मर्ज में मरीज की स्थिति तेजी से बिगड़ती है। अगर मरीज ने दो हफ्ते तक खुद को संभाल लिया तो उस पर इलाज का सकारात्मक प्रभाव तेजी से सामने आने लगता है लेकिन उन दो हफ्तों तक सर्वाइव करना बेहद कठिन होता है। विश्व में अब तक कैंसर के

पीजीआई चंडीगढ़ की उपलब्धि

मरीजों को इलाज कीमो से ही हो रहा है ले कि न पीजीआई ने पहली बार कीमो के बजाय मरीजों को दवाओं की खुराक दी। इसमें विटामिन ए और आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड शामिल किया।

कीमो की तुलना में मिला बेहतर परिणाम

इस शोध के पहले लेखक डॉ. चरनप्रीत सिंह ने बताया कि 15 वर्षों तक संस्थान में चले इस शोध में 250 मरीजों को शामिल किया गया। उन मरीजों को कीमो की जगह विटामिन ए और आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड दिया गया। गंभीर मरीजों को दो साल तक और कम गंभीर मरीजों को चार महीने तक दवा दी गई और लगातार फॉलोअप के साथ टेस्ट किए गए। सभी 250 मरीजों की जब कीमो वाले मरीजों की स्थिति से तुलना की गई तो परिणाम काफी बेहतर मिला। कीमो की तुलना में शोध में शामिल मरीजों पर इलाज की सफलता दर 90 प्रतिशत रही। जो मरीज दो हफ्ते के दौरान सर्वाइव नहीं कर पाए उनका ही परिणाम नकारात्मक रहा। 90 प्रतिशत मरीज पूरी तरह ठीक हैं और सामान्य जीवन जी रहे हैं।

सीधे लक्ष्य पर काम करती है दवा

कीमो जहां कैंसर कोशिकाओं को समाप्त करता है, वहीं इसका दुष्प्रभाव अन्य अंगों पर भी पड़ता है जबकि विटामिन ए और आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड की डोज कैंसर सेल बनाने की स्थिति को ही पूरी तरह समाप्त कर देता है।

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 05.02.2024

कांचरापाड़ा वर्कशॉप रेलवे अस्पताल में सर्वाइकल कैंसर निवारण कार्यक्रम-सन्मार्ग, 5th Feb. 2024

कांचरापाड़ा वर्कशॉप रेलवे अस्पताल में सर्वाइकल कैंसर निवारण कार्यक्रम

कोलकाता : राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता माह मनाने और विश्व कैंसर दिवस का सम्मान करने के लिए एक सक्रिय कदम में, कांचरापाड़ा वर्क शॉप हॉस्पिटल ने एक समर्पित सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यक्रम की मेजबानी की। सर्वाइकल और स्तन कैंसर की जांच से पहले इस कार्यक्रम का उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना था। शीघ्र पता लगाने के लिए जागरूकता की गयी। प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक/ई.रेलवे डॉ मिहिर कुमार चौधरी के जरिये कार्यक्रम को अटूट समर्थन मिला। पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन (ईआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ) की अध्यक्ष/अध्यक्ष पूनम चंद्रा ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जिससे ऑफिसर्स क्लब, कांचरापाड़ा पूर्वी रेलवे की कार्यवाही में चार चांद लग गए। डॉ। अनुपा घोष, सीएमएस/कंचरापाड़ा, और सुभाष चंद्रा, मुख्य कार्य प्रबंधक, कांचरापाड़ा ने इस कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन किया। चिकित्सा विशेषज्ञों की एक टीम, जिसमें डॉ. सुजाता कुंडू, डॉ. अनन्या मुखर्जी, डॉ. उज्जवल पारुई, डॉ. कोयल दास, डिप्टी सुभमय गैटैट, और डॉ. पल्लभी बनर्जी ने विभिन्न कैंसर और उनके जोखिम कारकों पर एक व्यापक पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में ऑनलाइन और ऑफलाइन भागीदारी का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण देखा गया, जिसने एक ऐतिहासिक मिसाल कायम की। डॉ। अरिजीत देबनाथ, जी एंड ओ के सहायक प्रोफेसर, जेएनएम मेडिकल कॉलेज, कल्याणी, और डॉ. अरिंदम चौधरी, विभाग। ऑन्कोलॉजी विभाग, एम्स, कल्याणी ने कार्यक्रम में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की।

The Statesman

Date: 05.02.2024

Goa to provide Pertuzumab-Trastuzumab drug como for free to Her2breast cancer patients- The Statesman, 5th Feb. 2024

Goa to provide Pertuzumab-Trastuzumab drug combo for free to Her2 breast cancer patients

AGENCIES
PANAJI, 4 FEBRUARY

As the world marks #WorldCancerDay, the state of Goa on Sunday announced significant strides in cancer care, promising free access to the Pertuzumab-Trastuzumab drug combination for those battling Her2 breast cancer.

Vishwajit, in a momentous declaration in a post on X, revealed Goa's commitment to revolutionizing cancer care, particularly in the realm of Her2 breast cancer treatment. Effective immediately, Goa Medical College will offer free access to the Pertuzumab-Trastuzumab drug combination, a cutting-edge therapy known for its efficacy in battling Her2 breast cancer.

"As we observe #WorldCancerDay today, I am honored to share the strides Goa has made in advancing cancer care in the state. Thrilled to share that, today onwards, we will provide free access to Pertuzumab-Trastuzumab drug combination at Goa Medical College," Minister Rane said in the post.

Expressing enthusiasm about the groundbreaking development, Rane emphasized the state's dedication to leveraging state-of-the-art technologies for early cancer detection across various types of cancer.

"It is an advanced therapy, and its free of cost availability will prove a significant leap in Her2 breast cancer treatment. Our commitment extends to using cutting-edge technologies to ensure early detection of various types of cancer," the Minister's post mentioned. Minister Rane reiterated Goa's pledge to reduce cancer incidence rates within the state. The announcement also highlighted Goa's ambitious plans to establish a State Cancer Institute, aimed at delivering world-class cancer care services to its residents.

"On this global day of pledging commitment to fight cancer, I reinforce our dedication to curtailing cancer cases in the state.

Towards this end, we are on our way to establish State Cancer Institute in Goa to provide world-class cancer treatment to the people. #TheGoaModel #Goa4BestCancerCare," he added.

Awareness program: On the rising number of cancer cases in India, Dharamshila Narayana Superspeciality Hospital in Delhi, conducted an awareness program in commemoration of World Cancer Day, aimed at spreading the word about the disease. Cancer is a highly formidable disease, but advancements in its treatment have progressed significantly.

To increase awareness about this, World Cancer Day is observed every year on 4 February. Referring to the alarming estimate by the Indian government through ICMR and NPCP, stating that by 2025, there could be 16 lakh cancer patients across the country, it becomes crucial for people to exercise caution.

Indian Cancer Society Launches 'Rise Against Cancer' Mobile App: The Indian Cancer Society (ICS), India's largest anti-cancer NGO, commemorates World Cancer Day by unveiling its groundbreaking 'Rise Against Cancer' mobile app. Supported by Rajiv Gandhi Cancer Institute & Research Centre (RGCIRC) and Roche Products (India) Private Limited, the Made in India app aims to bridge gaps, foster awareness, and unite communities for a cancer-free future. According to GLOBOCAN, close to 1.3 million individuals are diagnosed with cancer annually, with nearly 800 thousand succumbing to the disease in 2020. Recognizing this alarming statistic, ICS has set a mission to reach 50 per cent of the total adult population within the next decade, offering accurate information and counseling about cancer to facilitate early detection and cure.

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 06.02.2024

চার্লসের ক্যানসার, বিশ্রামে রাজা-আনন্দবাজার পত্রিকা, 6th Feb. 2024

এক নজরে

চার্লসের ক্যানসার, বিশ্রামে রাজা

ক্যানসারে আক্রান্ত ব্রিটেনের রাজা তৃতীয় চার্লস। তবে তাঁর কোথায়, বা কী ধরনের ক্যানসার হয়েছে, তা প্রকাশ করা হয়নি। সোমবার সন্ধেবেলা বাকিংহাম প্রাসাদের পক্ষ থেকে এক বিবৃতি জারি করে রাজার অসুস্থতার কথা জানানো হয়। বিবৃতিতে বলা হয়েছে, সোমবার থেকেই তাঁর চিকিৎসা শুরু হয়েছে। ৭৫ বছর বয়সি চার্লস আপাতত বিশ্রামে থাকবেন। তবে দেশের সাংবিধানিক প্রধান হিসেবে যা যা দায়িত্ব পালন করার, সব কিছুই করবেন তিনি। প্রয়োজনে একান্ত বৈঠকও করবেন।

The Statesman

Date: 07.02.2024

King Charles II'S cancer was caught early: Rishi Sunak- The Statesman, 7th Feb. 2024

King Charles III's cancer was caught early: Rishi Sunak

AGENCIES
LONDON, 6 FEBRUARY

British Prime Minister Rishi Sunak said Tuesday that he was "shocked and sad" to learn that King Charles III has cancer, but is relieved that the illness was caught early.

Buckingham Palace announced Monday evening that the king has begun outpatient treatment for an undisclosed form of cancer. It was found during his recent treatment for an enlarged prostate but is not connected to that condition, the palace said.

"Thankfully, this has been caught early," Sunak told BBC radio, adding that as prime minister he would "continue to communicate with him as normal."

"He'll just be in our thoughts and our prayers. Many families around the country listening to this will have been touched by the same thing and they know what it means to everyone," Sunak said. "So we'll just be willing him on and hopefully we get through this as quickly as possible."

Less than 18 months into his reign, the 75-year-old monarch has suspended public engagements but will continue with state business — including weekly meetings with the prime minister — and won't be handing over his constitutional roles as head of state. The palace said Charles, who has generally enjoyed good health, "remains wholly positive about his treatment and looks forward to returning to full public duty as soon as possible."

Charles became king in September 2022 when his mother, Queen Elizabeth II, died at the age of 96 after 70 years on the throne.

News of the king's diagnosis comes as his daughter-in-law Kate, Princess of Wales, recovers from abdominal surgery that saw her hospitalized for about two weeks. Kate is still taking a break from royal duties as she recovers. The king's younger son, Prince Harry, who quit royal duties in 2020 and moved to California, has spoken to his father about the diagnosis and "will be traveling to the UK to see His Majesty in the coming days," said the office of Harry and his wife, Meghan. UK media reported that he was en route Tuesday from Los Angeles.

The Statesman
PEOPLE'S PARLIAMENT, ALWAYS IN SESSION
Wed, 07 February 2024
https://epaper.thestatesman.com/c/74580575

The Statesman

Date: 07.02.2024

Tips to avoid cervical cancer- The Statesman, 7th Feb. 2024

Tips to avoid cervical cancer

Cervical cancer is the 4th most common cancer in women worldwide and 2nd most common cancer among females in India. In India, approximately 1.2 lakh new cases of cervical cancer are diagnosed every year. Cervical cancer is more common in low and middle income countries where there is lack of access to health care service. Cervical cancer is completely preventable. Late stage diagnosis, lack of access to quality care increases mortality and morbidity of cervical cancer. It usually affects women of the 35-50 years, says Dr Sreya Mallik, oncologist at Karkinos Healthcare.

What is cervical cancer? Cervical cancer starts in the cells of the cervix which is the lower part of the uterus. It is primarily caused by persistent infection with high-risk strains of human papillomavirus (HPV). Chronic HPV infection leads to cellular abnormalities (dysplasia), then ultimately to pre-invasive and then invasive cancer over several years.

What are the risk factors for cervical cancer?

Human papillomavirus (Almost all cervical cancer cases (99%) are linked to infection with HPV; HPV 16, 18); Poor sexual hygiene; Multiple sexual partners; Early sexual activity; Multiple pregnancies/ abortions; Immuno-compromised patients (Co-existing HIV infection).

What are the common symptoms of cervical cancer?

Vaginal bleeding after intercourse, between periods or after menopause; Menstrual bleeding that is heavier and lasts longer than usual; Watery, bloody vaginal discharge that may be heavy and have a foul odor; Pelvic pain or pain during intercourse; Low back pain; Generalized weakness, weight loss.

The best way to control cervical cancer is to prevent it from developing. This can be done via a combination of HPV vaccination & screening.

HPV Vaccination: HPV vaccine is highly effective in preventing HPV types that may cause cancer of the cervix.

HPV vaccines can be administered to both girls and boys; HPV vaccine is recommended for individuals between 9 and 26 years old; Ideal age for vaccination is before a person is sexually active (before exposure to HPV); Women 27-45 years of age can take the vaccine but the vaccine's efficacy is lower after 26 years.

TREATMENT OPTIONS:

If diagnosed at the pre-invasive stage, local treatment like LASER, thermal ablation and cryotherapy, without removal of the uterus are the treatment options available. For locally advanced disease radiotherapy along with chemotherapy is the treatment of choice.

The Statesman PEOPLE'S PARLIAMENT, ALWAYS IN SESSION
Wed, 07 February 2024
https://epaper.thestatesman.com/c/74518031

The Statesman

Date: 09.02.2024

Taking the battle to cervical cancer- The Statesman, 9th Feb. 2024

Taking the battle to cervical cancer

DR. SATISFY DKHAR
AND SUSHANT KHALKHO

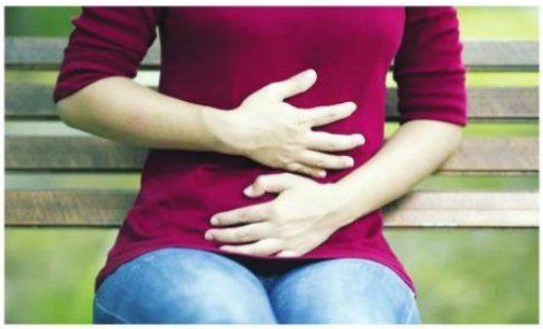

Cervical cancer is again in the national news, this time as a result of fake news doing the rounds on social media platforms, asserting the untimely death of Indian actress Poonam Pandey due to cervical cancer. Earlier this week, during the interim budget speech of 2024-2025, the finance minister had batted for cervical cancer vaccination for girls aged between 9 to 14 years. While there is welcome spotlight and analysis on the causes of this pernicious disease, at the same time it is also imperative to understand the nuances of the wider public debate taking place concerning the road ahead for India in eradicating this persistent public health menace.

Globally, cervical cancer is the fourth most widely reported cancer, accounting for 10 per cent of all female cancers. As per statistics from GLOBOCAN 2022, cancer of the cervix uteri has a mortality rank of 9 and causes 3,48,186 deaths worldwide. Recent studies have indicated that low and middle-income countries (LMICs) have higher incidence and mortality rates of cervical cancer, with 90 per cent deaths of the aforementioned deaths worldwide occurring in LMICs. Closer home, as per the HPV Information Centre's latest HPV and Related Cancers Report 2023: India, cervical cancer ranks as the second most common cancer among Indian women between ages 15 to 44, with about 5 per cent (i.e., 2,56,114) of Indian women harbouring human papillomavirus (HPV) at any given time.

As per the WHO, cervical cancer is also, but not exclusively, caused by persistent infection with the HPV leading to cervical precancerous lesions, which if left untreated, cause 95 per cent of cervical cancers. Some of the contributing risk factors of cervical cancer are poor genital hygiene, multiple sexual partners resulting in increased exposure to HPV, etc.. Symptoms can range from excessive white discharge, bleeding between the periods, bleeding during sexual intercourse, postmenopausal bleeding, chronic pain in the abdomen, low backache, etc., depending on the stage of the cancer. Notably, cervical cancer can be prevented economically and effectively through the use of prophylactic HPV vaccination, timely screening, and speedy health-seeking behaviour for treatment of the virus.

Nevertheless, obstacles to the fight against cervical cancer remain. Cost-related concerns make the HPV vaccine unaffordable for many if not most Indians. Even popular brands of the vaccine developed indigenously by home-grown big pharma can cost as much as Rs 2,000-4,000 per dose, when purchased privately. Moreover, currently there is no single comprehensive cervical cancer programme or policy in place at the national level requiring big pharma to supply HPV vaccines at favourable and discounted rates.

However, recently in January 2023 - interestingly also the month observed as 'world cervical cancer awareness' month - the Ministry of Health and Family Welfare wrote to seven state governments, from Tamil Nadu to Himachal Pradesh, requesting them to prepare for the roll-out of the HPV vaccine for girls aged 9 to 14 years in their respective states.

This effort is widely understood to be the commencement of a phased introduction of HPV vaccination into routine mass immunisation programmes in the country. This idea is not new. In 2022, the National Technical Advisory Group on Immunization (NTAGI) had endorsed introduction of indigenously developed HPV vaccine in the universal immunization programme as a two-dose regimen.

In this matter, the experience of the United Kingdom, which adopted the HPV vaccination into its national health programmes more than a decade ago and has since commendably achieved an 86 per cent reduction in HPV infections, is instructive. Lessons can also be drawn from the successful HPV vaccination rollouts in the state of Sikkim. Sikkim had initially introduced the vaccine in 2014 but the initiative faltered at the time due to social hesitancy. Leveraging the lessons learnt from 2014, the vaccine was re-introduced in 2018, backed by detailed pre-rollout preparations, aggressive media sensitization, and a strong political will, resulting in a 97 per cent coverage.

The hope now is that finance minister's clarion call on the need for HPV mass immunization will provide a fillip for capacity building and mass production by domestic drug manufacturers, thus making the vaccine available as cheaply as INR 200-400 per dose, and bring it closer to the common person's reach. This bold step holds immense promise of success. A related point to note is that as per the latest NFHS-5 (2019-21) data, only 1.9 per cent of Indian women (2.2 per cent urban and 1.7 per cent rural) between the ages of 30 to 49 have undergone cervical cancer screening in their lifetime. In areas of high-incidence such as Africa and Asia, cancer screening programmes have demonstrated ability to effectively help identify early-stage malignancies.

It goes without saying that the utilization of cervical cancer screening as a method of early detection by health professionals and the general Indian populations alike remains woefully low despite the national programme for prevention and control of cancer, diabetes, cardiovascular diseases and stroke (NPCDCS) recommending national cervical cancer screening to be conducted at every five years' interval for those falling in the age bracket of 30 to 65 years. However, in India, whether such screenings are actually conducted at the ground level is anyone's guess.

Stepping up and experimenting with more proactive and robust screening strategies at the primary and secondary-levels of health care in PHCs, CHCs, and HWCs is a vital public health need of the times. Therefore, it stands to reason that regular and robust cervical cancer screening at the grassroots-level accompanied by universal vaccination under the national immunization program, especially in rural India, is a surefire way to realise the dream of a cervical cancer free India. Only then will India have a fighting chance to expedite and realize the targets set by the WHO for elimination of cervical cancer by 2030.

(The writers are, respectively, with the KSRDPRU, Gadag (School of Public Health, and Sanitation Management, Karnataka) specializing in NCD screening of common cancers, and with the National Law School of India University, Bengaluru. The views are personal.)

The Statesman Fri, 09 February 2024
https://epaper.thestatesman.com/c/74530730

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 16.02.2024

ক্যানসারের টিকা -আনন্দবাজার পত্রিকা, 16th Feb. 2024

এক নজরে

ক্যানসারের টিকা

ক্যানসারের প্রতিষেধক প্রায় প্রস্তুত। এমনটাই দাবি করলেন রুশ প্রেসিডেন্ট ভ্লাদিমির পুতিন। তিনি জানিয়েছেন, তাঁর দেশের বিজ্ঞানীরা অনেক দিন ধরেই ক্যানসারের প্রতিষেধক তৈরির কাজ করছিলেন। খুব শীঘ্রই সেই টিকা বাজারে আসতে চলেছে। মস্কোয় ভবিষ্যৎ প্রযুক্তি নিয়ে একটি আলোচনাচক্রে পুতিন বলেন, "ক্যানসারের প্রতিষেধক ও ইমিউনোমডিউলেটরি ড্রাগ তৈরির কাজ প্রায় প্রস্তুত। আশা করি, শীঘ্রই ব্যবহার করা হবে।" তবে কোন ক্যানসারের প্রতিষেধক, সে বিষয়ে কিছু জানানি রুশ প্রেসিডেন্ট। ক্যানসারের প্রতিষেধক নিয়ে আরও অনেক দেশে গবেষণা চলছে। তবে এই প্রথম কোনও রাষ্ট্রনেতা ঘোষণা করলেন।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 17.02.2024

সচেতন হলে আটকানো যায় সারভাইক্যাল ক্যানসার-আনন্দবাজার পত্রিকা, 17th Feb. 2024

সচেতন হলে আটকানো যায় সারভাইক্যাল ক্যানসার

বাজেট অধিবেশনে ভারতের অর্থমন্ত্রী নির্মলা সীতারামন ৯ থেকে ১৪ বছরের কিশোরীদের সারভাইক্যাল ক্যানসার বা জরায়ুর মুখের ক্যানসারের টিকা বিনামূল্যে দেওয়ার কথা ঘোষণা করেছেন। এ দেশে প্রতি বছর লক্ষাধিক মহিলা সারভাইক্যাল ক্যানসারে আক্রান্ত হন, তার মধ্যে মারা যান প্রায় ৭৫ থেকে ৭৭ হাজার মহিলা। ভারতীয় মহিলাদের যে ধরনের ক্যানসার বেশি হয়, তার মধ্যে দ্বিতীয় স্থানে সারভাইক্যাল ক্যানসার, অথচ এটি এমন একটি ক্যানসার যেখানে আগে থেকে সচেতন হলে এ রোগ আটকানো সম্ভব। বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থা বা ওয়ার্ল্ড হেলথ অর্গানাইজ়েশন (হু) পরিকল্পনা নিয়েছে ২০৩০-এর মধ্যে সারভাইক্যাল ক্যানসার মুক্ত বিশ্ব গড়বে। তাই এই যুদ্ধে শামিল হতে যেমন এগিয়ে আসতে হবে দেশকে, তেমন প্রতিটি কন্যাসন্তানের অভিভাবককে সচেতন হতে হবে।

জরায়ু-মুখের ক্যানসারের কারণ

সারভাইক্যাল ক্যানসার ভাইরাসজনিত সমস্যা। এ ব্যাপারে স্ত্রীরোগবিশেষজ্ঞ ডা. অরুণাভ রায় বললেন, "হিউম্যান প্যাপিলোমা ভাইরাসের কারণে সারভাইক্যাল ক্যানসার বা জরায়ুর মুখের ক্যানসার হয়। সাধারণত যৌন সম্পর্কের মধ্য দিয়ে পুরুষের শরীরের থেকে নারীর শরীরে এই ভাইরাস সংক্রামিত হয়।"

কী করে বুঝবে সমস্যা হয়েছে?

মহিলাদের কোনও কারণে অস্বাভাবিক ও অনিয়মিত রক্তপাত হলে, দুটো মাসিকের মাঝে ছিটেফোঁটা রক্তপাত হতে থাকলে, শারীরিক মিলনের পরে এবং মেনোপজ়ের পরে রক্তপাত হলে সচেতন হতে হবে, স্ত্রীরোগবিশেষজ্ঞের পরামর্শ নিতে হবে। "অতিরিক্ত সাদা স্রাব হলে বা অস্বাভাবিক ব্লিডিং হলে অনেকেই ডাক্তারের কাছে যান। ওষুধ খেয়ে সমস্যা সমাধানও হয়ে যায়। কিন্তু ওষুধ বন্ধের পরে সমস্যা যদি আবার ফিরে আসে তা হলে বিষয়টি গুরুত্ব দিয়ে ভাবতে হবে। কারণ এটাও সারভাইক্যাল ক্যানসারের লক্ষণ," বললেন ডা. রায়।

প্রিভেনশন বা প্রতিকার

সারভাইক্যাল ক্যানসারের ভ্যাকসিন বা টিকা নেওয়া থাকলে অনেকটা সুরক্ষিত থাকা যায়। "প্রিভেনশন হিসেবে মেয়েদের সারভাইক্যাল ক্যানসারের ভ্যাকসিন নেওয়ার আদর্শ সময় ৯ থেকে ১৪ বছরের মধ্যে। প্রথম ভ্যাকসিন নেওয়ার ছ'মাস পরে আরও একটি ভ্যাকসিন নিতে হবে," বললেন ডা. রায়। অনেকেই মনে করেন ৯ থেকে ১৪ বছরের পরে আর ভ্যাকসিন নেওয়া যায় না। এই ব্যাপারে ডা. রায় বললেন, "১৫ বছরের পর থেকে যে কোনও বয়সিরা ভ্যাকসিন নিতে পারেন, সে ক্ষেত্রে তিনটে ডোজ় নিতে হবে। এই ভ্যাকসিন হাইলি এফেক্টিভ, এবং ৯০ শতাংশে ক্যানসারের সম্ভাবনা আটকে দেয়। এ ছাড়া বিবাহিত মহিলা যাঁরা ভ্যাকসিন নেননি, তাঁদের নিতে হবে স্ক্রিনিং প্রিভেনশন। স্ক্রিনিং দু'ভাবে করা হয়, প্যাপ টেস্ট আর এইচপিভি টেস্টের মাধ্যমে। প্যাপ করতে হয় তিন বছর অন্তর এবং এইচপিভি পাঁচ বছর অন্তর। প্যাপ ২০ থেকে ৬৫ বছরের মধ্যে আর এইচপিভি ৩০ থেকে ৬৫ বছরের মধ্যে। বিবাহিত মহিলারা যাঁরা কিশোরী বয়সে ভ্যাকসিন নিয়েছেন, তাঁদেরও ৩৫ থেকে ৪৫-এর মধ্যে বা মেনোপজ়ের পরে স্ক্রিনিং করানো জরুরি। কারণ ভ্যাকসিন ৯০ শতাংশ সুরক্ষা দেয়। তাই নির্দিষ্ট সময় অন্তর স্ক্রিনিং করিয়ে নিলে পুরোপুরি নিশ্চিন্ত থাকা যায়। কিন্তু দুর্ভাগ্য, আমাদের দেশে যাঁরা আক্রান্ত হচ্ছেন তাঁদের মধ্যে ৮৫ শতাংশ অ্যাডভান্স স্টেজে এসে চিকিৎসকের কাছে যান," বললেন ডা. রায়। সারভাইক্যাল ক্যানসারের ক্ষেত্রে প্রি-ক্যানসার স্টেজ থেকে ক্যানসার স্টেজে যেতে সময় লাগে প্রায় ১৫ বছর। এই ক্যানসারকে রুখতে হাতে যথেষ্ট সময় থাকে। তাই একটা বয়সের পরে স্ক্রিনিং জরুরি।

সচেতনতাই হাতিয়ার

ইউরোপ ও আমেরিকার দেশগুলিতে প্রিভেনশন স্ট্র্যাটেজি নিয়ে সারভাইক্যাল ক্যানসার প্রায় মুছে ফেলা সম্ভব হয়েছে। এ সব দেশে জেন্ডার নিউট্রাল ভ্যাকসিনেশন শুরু হয়েছে। কারণ এই ভাইরাস ছেলেরা বহন করে। ছেলে-মেয়ে দু'জনকেই দেওয়ার ফলে ভাইরাস আর জন্মাতে পারছে না। ও সব দেশে স্ক্রিনিং বাধ্যতামূলক। ভারতের ক্ষেত্রে প্রধান প্রতিবন্ধকতা বিপুল জনসংখ্যা, শিক্ষা ও অর্থনৈতিক কারণ। সচেতনতা গড়ে তুলতে যদিও দেশজুড়ে বিভিন্ন স্বেচ্ছাসেবী সংগঠন উদ্যোগ নিচ্ছে, কিন্তু তা যথেষ্ট নয়। সরকারের হস্তক্ষেপ প্রয়োজন। আশা করা যায়, এই ক্যানসারের টিকাকরণের বিষয়ে অর্থমন্ত্রীর প্রস্তাব কিছুটা দিশা দেখাবে।

আগে বিদেশ থেকে ভ্যাকসিন আনতে হত, দুটো ডোজ়ের দাম পড়ত প্রায় আট হাজার টাকা। এখন ভারতেই তৈরি হচ্ছে এই ভ্যাকসিন এবং দাম প্রায় অর্ধেক হয়েছে। শিশুরোগ বিশেষজ্ঞদের বড় দায়িত্ব হল, বিভিন্ন রোগের ভ্যাকসিন দেওয়ার পাশাপাশি এই রোগের ভ্যাকসিন সম্পর্কে জানাতে হবে কন্যাসন্তানের অভিভাবকদের। যত আগে ভ্যাকসিন দেওয়া যাবে তত তাড়াতাড়ি ইমিউনিটি তৈরি হবে।

অন্য দিকে বহু মানুষের ধারণা, যে রোগের ভ্যাকসিন দেওয়া হয়, সেই রোগ দেহে বাসা বাঁধে। "এটা একেবারে ভ্রান্ত ধারণা। পালস পোলিয়োর সময়েও এই সমস্যার সম্মুখীন হতে হয়েছিল। ভ্যাকসিন পুরোপুরি সুরক্ষিত। সমস্যা হতে পারে ভ্যাকসিনের দাম নিয়ে। অনেকের দুটো ভ্যাকসিন কেনার মতো সামর্থ্য নাও থাকতে পারে। সে ক্ষেত্রে কমব অন্তত একটা ভ্যাকসিন দিন আপনার মেয়েকে। গবেষণায় দেখা গিয়েছে একটা ভ্যাকসিন দিলেও কাজ হয়। দুটো দিলে অবশ্যই ভাল। স্ক্রিনিং টেস্টের ক্ষেত্রেও একই, আর্থিক সামর্থ্য না থাকলে অন্তত একবার করুন। যাঁরা ইতিমধ্যে আমাদের কাছে চিকিৎসার জন্য আসেন, তাঁদের জিজ্ঞেস করি বাড়িতে ছোট মেয়েদের ভ্যাকসিন হয়েছে কিনা বা স্ক্রিনিং করানোর কথা বলি। উদ্দেশ্য সচেতন করে দেওয়া," বললেন ডা. রায়।

সামর্থ্য থাকলেও বারবার স্ক্রিনিং টেস্ট করাতে চান না অনেকেই, ভাবেন অনর্থক খরচ। হিসেব করলে দেখা যাবে ৩০ থেকে ৬৫ বছরের মধ্যে সাত বার স্ক্রিনিং করাতে আনুমানিক মোট খরচ ১৫ হাজার টাকা। কিন্তু রোগটি হলে তার চিকিৎসার খরচ অনেক গুণ বেশি। প্রিভেনশন ইজ় বেটার দ্যান কিয়োর কথাটি সারভাইক্যাল ক্যানসার দমনের একমাত্র মন্ত্র।

ঊর্মি নাথ

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 20.02.2024

অন্তঃসত্ত্বা ক্যানসার রোগিণীর সন্তানের জন্ম, সুস্থ মা ও শিশু- আনন্দবাজার পত্রিকা, 20th Feb. 2024

অন্তঃসত্ত্বা ক্যানসার রোগিণীর সন্তানের জন্ম, সুস্থ মা ও শিশু

শান্তনু ঘোষ

ক্যানসারের নিরাময় করতে হলে গর্ভপাত করাতে হবে। চিকিৎসকদের এমন কথায় ভেঙে পড়লেও হাল ছাড়েননি বছর চৌত্রিশের বধূ। গর্ভস্থ সন্তানকে সুস্থ ভাবে জন্ম দেওয়া এবং একই সঙ্গে ক্যানসারের চিকিৎসা চালানোর আর্জি নিয়ে উত্তরবঙ্গ থেকে কলকাতায় চলে এসেছিলেন। তাঁর জেদের কাছে হার মেনেছিলেন এসএসকেএমের চিকিৎসকেরাও। রীতিমতো ঝুঁকি নিয়েই অন্তঃসত্ত্বা ওই মহিলার স্তন ক্যানসারের চিকিৎসা শুরু করেছিলেন তাঁরা।

মাস তিনেক আগে সুস্থ সন্তানের জন্ম দিয়েছেন ওই বধূ। আর দিনকয়েক আগে অস্ত্রোপচার করে তাঁর স্তন পুনর্গঠনও করা হয়েছে। চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, বধূর দু'টি ইচ্ছাই সাফল্যের সঙ্গে পূরণ করা সম্ভব হয়েছে। ওই বধূর চিকিৎসা করা স্তন ক্যানসার শল্য চিকিৎসক দীপ্তেন্দ্র সরকার বলেন, "ক্যানসারের চিকিৎসায় রোগীর নিজস্ব, পারিবারিক ও সামাজিক সমস্যাগুলিকে ঠিক ভাবে বুঝে সেই মতো ব্যবস্থা নিতে হয়। তা হলে সমস্ত বাধা পেরিয়ে যাওয়া সম্ভব। যেমন এই ক্ষেত্রে হয়েছে।"

পুরাতন মালদহের বাসিন্দা মহম্মদ আজাদ শেখ জানাচ্ছেন, গত বছর মে মাসে তাঁর স্ত্রী মলি খাতুন অন্তঃসত্ত্বা হন। সেই সময়েই মলি বাঁ দিকের স্তনে একটি মাংসপিণ্ড (টিউমার) রয়েছে বলে অনুভব করেন। স্থানীয় স্ত্রীরোগ চিকিৎসককে সেটি দেখালে তাঁরা পরীক্ষা করে জানান, মলি স্তন ক্যানসারে আক্রান্ত। ওই রোগের চিকিৎসা করাতে হলে গর্ভপাত করাতে হবে। কিন্তু তাতে রাজি হননি দম্পতি। এক দিকে ক্যানসার, আর এক দিকে গর্ভস্থ সন্তান— এই দুই নিয়ে টানাপড়েনের মধ্যে ছিলেন তাঁরা। আজাদ বলেন, "আরও ডাক্তার দেখালাম, সকলেই একই কথা বলছিলেন। কিন্তু আমরা রাজি ছিলাম না। এই ভাবে প্রায় তিন মাস কেটে গেল।" এর পরে বিভিন্ন জায়গায় খোঁজখবর নিয়ে কলকাতায় আসার সিদ্ধান্ত নেন পেশায় দোকানে ওষুধ পৌঁছে দেওয়ার কর্মী আজাদ।

গত বছরের জুলাইয়ে তাঁরা কলকাতার একটি বেসরকারি হাসপাতালে এসে ক্যানসার চিকিৎসক কৌশিক চট্টোপাধ্যায়ের সঙ্গে যোগাযোগ করেন। মলির সঙ্গে কথা বলার পরে চিকিৎসক বুঝতে পারেন, বিষয়টিতে যথেষ্ট ঝুঁকি রয়েছে। তাই ওই রোগীকে এসএসকেএমে পাঠানো হয়। সেখানে মূলত কৌশিক এবং দীপ্তেন্দ্রর অধীনে চিকিৎসা শুরু হলেও স্ত্রীরোগ বিভাগের প্রধান চিকিৎসক সুভাষ বিশ্বাস, নিয়োনেটোলজির প্রধান চিকিৎসক সুচন্দ্রা মুখোপাধ্যায়কে নিয়ে মেডিক্যাল বোর্ড গঠন করা হয়। কৌশিক জানাচ্ছেন, গর্ভাবস্থার প্রথম তিন মাসের মধ্যে ভ্রূণের অঙ্গপ্রত্যঙ্গ তৈরি হয়ে যায়। আর মলি তাঁদের কাছে এসেছিলেন, যখন তাঁর দ্বিতীয় ট্রাইমেস্টার (প্রথম তিন মাসের পরের তিন মাসের অধ্যায়) চলছিল। ওই চিকিৎসক বলেন, "ওই সময়কালে কেমো দিলে গর্ভস্থ সন্তানের ক্ষতি হওয়ার আশঙ্কা তেমন নেই। তাই তাড়াতাড়ি কেমো চালু করা হয়।"

চিকিৎসা চলাকালীন হাসপাতালের আশপাশে ঘর ভাড়া নিয়ে থাকতে শুরু করেন আজাদেরা। চিকিৎসকেরা জানাচ্ছেন, গত অক্টোবর মাসের মাঝামাঝি নাগাদ পরীক্ষায় দেখা যায়, মলির গর্ভস্থ সন্তানের কিডনিতে কিছু সমস্যা রয়েছে। তখন তড়িঘড়ি সিজ়ারের সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকেরা। সেই মতো কেমো বন্ধ করা হয়। গত বছরের নভেম্বরে মলি ও আজাদের সন্তান জন্ম নেয়। মালদহের ওই যুবক বলেন, "জন্মের পরে নিয়োনেটাল কেয়ার ইউনিটে বাচ্চাকে কয়েক দিন রেখে সুস্থ করে ছাড়া হল। আমাদের প্রথম সন্তানের মুখ দেখতে পাব, তা ভাবতেই পারিনি।" দীপ্তেন্দ্র জানাচ্ছেন, সিজ়ারের আগে থেকে শুরু করে প্রসবের পরেও বেশ খানিকটা সময়— সব মিলিয়ে প্রায় দেড় মাস কেমো বন্ধ রাখা হয়েছিল। তার ফলে মলি তাঁর সন্তানকে স্তন্যপানও করাতে পেরেছেন।

এর পরে ফের কেমো চালু হয় মলির। কিন্তু স্তনের মধ্যে থাকা টিউমারের আকার কমছে না দেখে অস্ত্রোপচারের সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকেরা। টিউমার বাদ দেওয়ার পাশাপাশি পিঠ থেকে মাংস নিয়ে স্তন পুনর্গঠন করা হয়। দীপ্তেন্দ্র বলেন, "ক্যানসারমুক্ত করার পাশাপাশি রোগীর ইচ্ছে মতোই স্তন বাঁচানো ও মাতৃত্বের স্বাদ— দুই-ই দেওয়া সম্ভব হল।" আর সুভাষ বিশ্বাস বলছেন, "মা ও সন্তান, উভয়ের স্বাস্থ্যের দিকেই নজর রেখে ওষুধ দিতে হয়েছিল। কারণ, ক্যানসার আক্রান্ত ওই মায়ের কাছে মানসিক সুস্থতাই ছিল আসল। সেটা বজায় রাখতে পারার কারণেই ভাল ফল মিলেছে।"

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 22.02.2024

नुक्कड़ नाटक से कैंसर के प्रति किया गया जागरूक-सन्मार्ग, 22nd Feb. 2024

नुक्कड़ नाटक से कैंसर के प्रति किया गया जागरूक

सन्मार्ग संवाददाता

कोलकाता : नारायणा हेल्थ, कोलकाता ने नारायणा हॉस्पिटल, हावड़ा, और नारायणा हॉस्पिटल आरएन टैगोर हॉस्पिटल, मुकुंदपुर के साथ मिलकर नुक्कड नाटक के माध्यम से कैंसर जागरूकता अभियान की शुरूआत की। छह दिन तक चलने वाले नुक्कड नाटक जागरूकता अभियान की शुरूआत 14 फरवरी से हुई। यह अभियान कैंसर के बचाव और समय पर कैंसर की पहचान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। नारायणा हेल्थ के ग्रुप सीओओ **आर. वेंकटेश** ने कहा, नुक्कड नाटक संचार का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। बंगाल में लोग कला के इस माध्यम को काफी पसंद करते हैं।

नुक्कड़ नाटक में हास्यपूर्ण व्यावहारिक बातचीत के जरिए समय पर चिकित्सा और देखभाल के महत्व और देश भर में कैंसर के इलाज में नारायणा हेल्थ की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। नारायणा अस्पताल, हावड़ा के फैसिलिटी डायरेक्टर, **असीम कुमार** ने कहा कि शहर में कैंसर के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। जिसका प्राथमिक कारण अस्वास्थ्यकर जीवनशैली और तनाव है।

इसलिए हमने अभियान के लिए शहर की घनी आबादी वाले इलाकों को चुना। नुक्कड़ नाटक का मुख्य उद्देश्य स्तन, प्रोस्टेट, सिर और गर्दन, स्त्री रोग और फेफड़ों के कैंसर के बारे में संदेश फैलाना था। नारायणा हॉस्पिटल आरएन टैगोर हॉस्पिटल, मुकुंदपुर के फैसिलिटी डायरेक्टर **अभिजीत सीपी** ने कहा, कैंसर के खिलाफ लड़ाई में हमारा उद्देश्य व्यक्ति और समुदाय में एक सार्थक परिवर्तन लाना है।

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

Date: 22.02.2024

कैंसर को हराया जा सकता है : डॉ. विकास-सन्मार्ग, 22nd Feb. 2024

कैंसर को हराया जा सकता है : डॉ. विकास

ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. विकास कुमार अग्रवाल

कोलकाता : समय पर उचित चिकित्सा से कैंसर को हराया जा सकता है। बस समय रहते इसका उपचार शुरू कर दिया जाए। यह कहना है डॉ. विकास कुमार अग्रवाल का। सेलिब्रेट होप नाम के कार्यक्रम द्वारा वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. विकास कुमार अग्रवाल ने यह संदेश दिया है। इस कार्यक्रम को वी केयर कैंसर सेंटर (वीसीसीसी) द्वारा ग्लोबल कैंसर ट्रस्ट के सहयोग से किया गया। वीसीसीसी एक कैंसर सेंटर है जो रोगियों को समग्र देखभाल प्रदान करने के उद्देश्य से कैंसर के लिए नवीनतम निदान और उपचार प्रक्रिया प्रदान करता है। कीमोथेरेपी के बाद, सर्जरी के बाद घरेलू देखभाल सेवाओं के साथ सर्वोत्तम उपचार प्रदान करना इनका उद्देश्य है। वीसीसीसी मुख्य रूप से कैंसर के देखभाल पर ध्यान केंद्रित करता है, यह ट्यूमर बोर्ड सुविधाएं, कैंसर टीकाकरण, आनुवंशिक परामर्श, इम्यूनोथेरेपी, दर्द प्रबंधन और अन्य संबद्ध सेवाओं जैसी मल्टी मॉडल सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट, डॉ. विकास कुमार अग्रवाल और हेल्थ कोच विभा अग्रवाल का कहना है कि साथ मिलकर कैंसर हराया जा सकता है। इस मिशन के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर कैंसर का जल्दी पता चल जाए तो इसका इलाज संभव है।

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date:
24.02.2024

ক্যানসার আক্রান্ত শিশুদের সুস্থ করতে সমাজকে পাশে থাকার ডাক চিকিৎসকদের- আনন্দবাজার পত্রিকা, 24th Feb. 2024

ক্যানসার আক্রান্ত শিশুদের সুস্থ করতে সমাজকে পাশে থাকার ডাক চিকিৎসকদের

নিজস্ব সংবাদদাতা

লড়াইটা যেন মাঝপথে থেমে না যায়। তবে, সেই লড়াই চালিয়ে যেতে ক্যানসার আক্রান্ত শিশু ও তার পরিবারের পাশে থাকতে হবে সমাজকেও। তবেই একশো শতাংশ শিশু ক্যানসার মুক্ত হয়ে নতুন জীবনের স্বপ্ন দেখতে পারবে। শুক্রবার শহরে এক অনুষ্ঠানে এসে এমনই বার্তা দিলেন বরাক উপত্যকার ক্যানসার চিকিৎসক, রামন ম্যাগসাইসাই পুরস্কারপ্রাপ্ত রবি কান্নান। তাঁর সঙ্গে সহমত প্রকাশ করলেন উপস্থিত অন্যান্য চিকিৎসক এবং অতিথিরাও।

পরিসংখ্যান বলছে, এ দেশে যত ক্যানসার রোগী আছেন, তাঁদের দুই থেকে তিন শতাংশ শিশু। তার মধ্যে ৩৮ শতাংশ শিশুর মৃত্যু হয় মাঝপথে চিকিৎসা বন্ধ করে দেওয়ায়। যদিও শিশুদের ক্যানসারের ঠিক মতো চিকিৎসা হলে, আগামীর স্বপ্ন দেখতে পারে দেবরাজ চট্টোপাধ্যায়ের মতো আরও অনেকে। ওই যুবকের যখন ১৪-১৫ বছর বয়স, তখন ক্যানসার ধরা পড়ে। যার কারণে ওই কিশোরের বাঁ হাত বাদ যায়। কিন্তু নিয়ম মেনে চিকিৎসার পরে আজ পুরোপুরি সুস্থ দেবরাজ।

তাঁর আঁকা নিজেদের ছবি হাতে নিয়ে অবাক হয়ে গেলেন ক্যানসার শল্য চিকিৎসক রবি থেকে শুরু করে মঞ্চে দাঁড়ানো অতিথিরা। দেবরাজের মতো আরও অসংখ্য শিশুকে রোগ মুক্তির পরে জীবনে প্রতিষ্ঠিত করার দায়িত্ব এই সমাজের, সেই কথাই এ দিন বার বার মনে করিয়ে দিলেন হেমাটোলজিস্ট প্রান্তর চক্রবর্তীও। বললেন, "একটা শিশুর গোটা পরিবারকেই ক্যানসার অন্য পথে চালিত করে। অনেক ক্ষেত্রে পরিজনেরাও পাশ থেকে সরে যান। সবই সচেতনতার অভাব। সরে না গিয়ে ওই পরিবারের পাশে সমাজের সকল স্তরের মানুষকে থাকতে হবে।"

একই সুর শোনা গেল শিলচরের 'কাছাড় ক্যানসার হাসপাতাল অ্যান্ড রিসার্চ সেন্টার'-এর অধিকর্তা রবি কান্নানের গলায়। তিনি মনে করেন, ক্যানসার আক্রান্ত একটি শিশুকে সারিয়ে তুলতে পুরো এলাকার বা গ্রামের প্রয়োজন হয়। কারণ, ওষুধ, উন্নত চিকিৎসার মতো বিষয়ের পাশাপাশি বড় প্রয়োজন হয় সহমর্মিতার। এ দিন নিজের বক্তব্যে রবি জানান, বহু ক্ষেত্রেই দেখা যায়,

■ একটি অনুষ্ঠানে ক্যানসার বিজয়ী দেবরাজ চট্টোপাধ্যায়ের সঙ্গে ক্যানসার চিকিৎসক রবি কান্নান। শুক্রবার, রবীন্দ্র সদনে। *ছবি: সুমন বল্লভ*

প্রত্যন্ত এলাকা থেকে চিকিৎসা করাতে আসা পরিবারগুলি কিছু দিন পরে উধাও হয়ে যাচ্ছে। যার ফল খারাপ হচ্ছে। যদি ঠিক মতো চিকিৎসা করা হত, তা হলে ওই শিশু আর পাঁচ জনের মতোই স্বাভাবিক জীবন কাটাতে পারত। ওই চিকিৎসক আরও বলেন, "ক্যানসার আক্রান্ত শিশুর পুষ্টি থেকে শুরু করে হাসপাতালে যাতায়াতের খরচ জোগাড়, পরিবারকে মানসিক সাহস জোগানোর মতো অনেক কাজ রয়েছে। প্রাকৃতিক প্রতিকূলতায় যাতে রোগীর হাসপাতালে ফলো-আপে আসা বন্ধ না হয়, সেটাও খেয়াল রাখতে হবে। এই সব কাজ করতে দরকার সমাজের।"

রবির হাসপাতালের সঙ্গেও যৌথ ভাবে কাজ করে, এ দিন রবীন্দ্রসদনে অনুষ্ঠানের আয়োজক সংস্থাটি। এ দিন রবি বলেন, "কলকাতায় চিকিৎসা করাতে আসা শিশুদের পরিবার যাতে থাকতে পারে, সে জন্য একটি জায়গার ব্যবস্থা আমরা করব। সেই জমি বা বাড়ি পেতেও প্রয়োজন সামাজিক সহমর্মিতার।"

শিশুদের ক্যানসার নিয়ে কাজ করা ওই সংস্থার তরফে পার্থ সরকার বলেন, "আমাদের লক্ষ্য, একটি শিশুকেও ক্যানসারে মারা যেতে না দেওয়া। এসএসকেএম ও নীলরতন সরকার মেডিক্যাল কলেজে একটা সময়ে ৫০ শতাংশ শিশু ক্যানসার রোগী চিকিৎসা ছুট হয়ে যেত। আমাদের 'লাইফ বিয়ন্ড ক্যানসার' সংস্থা সেখানে কাজ শুরু করার পরে সেই সংখ্যা অনেক কমেছে।"

The Statesman

Date: 26.02.2024

Hoping for effective cancer vaccination in North-East- The Statesman, 26th Feb. 2024

Hoping for effective cancer vaccination in North-East

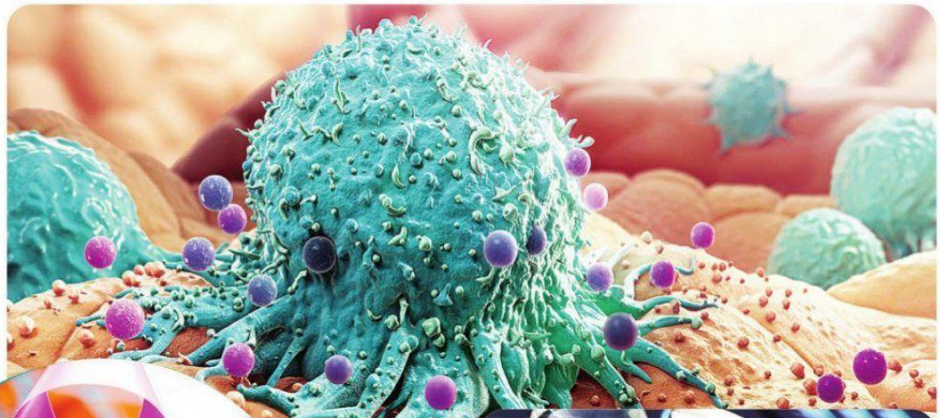

NAVA THAKURIA

The news came with apprehension as well as hope for the people of North-East India, as the region has slowly turned into a cancerous locality in the vast country. Russian President Vladimir Putin recently announced that his country was almost ready to launch a viable cancer vaccine. Speaking at a function in Moscow, Putin revealed that significant progress has been made by Russian scientists in developing important vaccines and immunomodulatory drugs. The hardliner Russian politician, who is globally condemned for his invasion of Ukraine, resulting in many casualties and enormous property damages, expressed optimism that the advancement of their scientific fraternity will transform the healthcare scenario across the globe. However, Putin did not reveal any specific information about the types of cancer vaccines.

According to medical experts, cancer is a disease where some of the body cells grow unusually. Human cells grow and multiply during the process of cell division. When the cells grow old or are damaged for any reason, new cells replace them. Sometimes this order can be disturbed, and thus an abnormal growth of cells takes place. Cancer can start anywhere in the body and spread to other parts. The vaccines help the human body fight against cancerous cells, improving their immunity. The vaccines can prevent a healthy person from getting certain cancers and also sometimes help treat the deadly disease by destroying harmful cancer cells.

Many advanced countries have been working to find effective cancer medicine and vaccines for decades. In its report, the World Health Organisation (WHO) confirmed the availability of six licenced vaccines targeting human papillomaviruses (HPV, which causes cervical cancer) and hepatitis B, which may lead to liver cancer. Incidentally, cervical cancer is the fifth most common cancer in the world, whereas it's ranked as the most frequent cancer among Indian women. India has already developed Cervavac as a preventive measure to fight against cervical cancer. The country's first cancer vaccine, launched by the Serum Institute of India after rigorous research, clinical trials, and necessary regulatory approvals, has been promoted by the Union government in New Delhi.

India has continued to increase the number of cancer-affected families in the recent past. The projected number of cancer cases in the country is estimated to be 15.7 lakh by next year. So it can be predicted that one in nine Indians may face a cancer diagnosis during his or her lifetime. The treatment and survival rates in India depend on various factors, like the type and stage of cancer, the time when the diagnosis was made, gender, and also the nature of the treatment.

While the efforts of public insurance programmes, including the Ayushman Bharat-Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana, to overcome the financial barriers remain laudable, collaborative efforts between the public and private sectors should play a pivotal role in making essential treatments more accessible and affordable to those who may not be eligible for public insurance schemes. The journey through cancer is not just about medical interventions but also providing a holistic support system to address the emotional and mental well-being of the patients as well as their families, opine holistic healthcare experts.

Like other parts of the country, the North-East too increases the number of cancer cases, and by 2025, it may witness 57,000 new cases. The Indian Council of Medical Research reports that the region faces a high burden of cancer compared to other parts of the country. The highest cancer incidence rate among males was recorded in Aizawl and among females in Papum Pare. The number of tobacco-related cancer cases, followed by stomach, lung, liver, breast and cervix cancer, remains high in the region.

According to the Assam Cancer Care Foundation, a joint partnership between the Assam government and Tata Trusts, nearly 32,000 new cases surface each year, where mortality is as high as 40 to 50 per cent. Set up in December 2017 to create a first-of-its-kind three-level cancer grid with the aim of addressing the cancer care burden in the state, the foundation also aims to bring out a modern cancer research centre in Guwahati. Currently, an apex hospital handles healthcare-related issues with a network of centres in different localities so that the rural population also gets the benefit of quality cancer care with reduced financial burden.

The life-threatening disease is still considered a curse on a family. Numerous Assamese plays, cinemas, stories, and media articles have depicted the painful disease as another name for death. Often, in the dialogue, cancer has no answer. So if any individual is diagnosed with cancer, irrespective of its stages, the family instantly presumes a dark future as the treatment remains so expensive. However, the practising doctors always encourage the patients (and also the affected families) to face the disease bravely. They argue that with early detection and proper treatment, cancer can be fully cured if the patient adopts medication with a positive outlook enriched with regular physical activities.

Cancer is also termed a huge scam, as many healthcare enthusiasts believe that the medical community possesses the capacity to develop a comprehensive cancer vaccine, but it often faces distractions from powerful beneficiaries of the scam, including pharmaceutical companies, private hospitals, adorable doctors, etc. Needless to mention, if the vaccination process becomes feasible and effective, those beneficiaries would lose their business empire, amounting to a huge volume of money. Now that Putin, already identified as an arrogant and authoritarian leader, declares the last-phase research for inventing cancer vaccines by Russian scientists, it has the potential to change the global healthcare scenario.

Unlike many politicians in power across the world, Putin may not bother about the hurdles and complications facing the invention and marketing of cancer vaccines, as he would prefer to improve his image from an invader to a humanitarian crusader. If the Russian cancer vaccine becomes a reality, Putin will be beneficiary number one in the process. Nonetheless, an inclusive cancer vaccine should emerge out of all technical hitches and complexities so that human suffering from the disease can be minimised, if not completely erased. Hoping against hope, 60 million people in the North-East also eagerly wait for such a breakthrough in the coming days.

The writer is a Guwahati-based special representative of The Statesman

The Statesman Mon, 26 February 2024
https://epaper.thestatesman.com/c/74634434

The Statesman

Date: 27.02.2024

Cancer biology & therapeutics MSc- The Statesman, 27th Feb. 2024

Cancer biology & therapeutics MSc

The University of Sheffield, UK is inviting applications for its MSc cancer biology and therapeutics course, starting in September 2024.

The programme provides research-led teaching in fundamental cancer biology, clinical oncology and the latest advances in modern therapeutics including immunotherapy and precision medicine. In addition, the six-month full-time research project is excellent preparation for a PhD and a career in healthcare or the pharmaceutical industry.

This course connects the cancer research that scientists conduct in the lab with the treatments that oncology patients receive. It covers the fundamental science of cancer, clinical aspects of cancer diagnosis and treatment, the current and emerging technologies of cancer research and the process of translating scientific discoveries into new therapies in areas including immunotherapy and precision medicine. 6-months of the course are dedicated to the full-time research project which students will undertake within one of the university's world-leading research teams to develop valuable research skills.

Students will study the cellular and molecular biology that underpins the transformation of normal cells into cancer cells and how these can be exploited in precision medicine. In addition, students will learn about the broader epidemiology of cancer, gaining insight into cancer risks and disease patterns within the population to understand how and why cancer occurs. The tumour microenvironment and its potential for therapeutic targeting are examined in detail. Students will learn how tumours grow, how cancer spreads, and how the cells that interact with cancer cells, such as immune cells, can influence tumour progression.

আনন্দবাজার পত্রিকা

Date: 28.02.2024

ক্যানসার গবেষণায় সাফল্য, দাবি ১০০ টাকায় ট্যাবলেট- আনন্দবাজার পত্রিকা, 28th Feb. 2024

ক্যানসার গবেষণায় সাফল্য, দাবি ১০০ টাকায় ট্যাবলেট

মুম্বই, ২৭ ফেব্রুয়ারি: ক্যানসার গবেষণায় নতুন দিশা দেখাল মুম্বইয়ের টাটা মেমোরিয়াল সেন্টার (টিএমসি)। সংস্থার পক্ষ থেকে জানানো হয়েছে, দ্বিতীয় বার ক্যানসারের আক্রমণ প্রতিরোধ করতে একটি ওষুধ আবিষ্কার করেছে তারা। রেডিয়েশন এবং কেমোথেরাপির মতো চিকিৎসার পার্শ্ব প্রতিক্রিয়াও ৫০ শতাংশ কমিয়ে দেবে ওই ওষুধ। সংস্থার গবেষক এবং চিকিৎসকেরা দশ বছর ধরে এই ওষুধ আবিষ্কারের কাজ করেছেন বলে আজ একটি বেসরকারি টিভি চ্যানেলকে দেওয়া সাক্ষাৎকারে জানান এই গবেষক দলের সদস্য, টাটা মেমোরিয়াল হাসপাতালের সিনিয়র ক্যানসার সার্জন রাজেন্দ্র বড়ভে।

এই গবেষকের কথায়, "গবেষণার জন্য ইঁদুরের মধ্যে মানুষের ক্যানসার কোষ ঢোকানো হয়েছিল। এই কোষ তাদের মধ্যে একটি টিউমার তৈরি করে। তখন ইঁদুরগুলিকে রেডিয়েশন থেরাপি, কেমোথেরাপি ও অস্ত্রোপচারের মাধ্যমে চিকিৎসা করা হয়। দেখা গিয়েছে, এই ক্যানসার কোষগুলি মারা গেলে সেগুলি ক্রোমাটিন নামক ক্ষুদ্র কণায় টুকরো হয়। এই কণাগুলি রক্তের মাধ্যমে শরীরের অন্য অংশে যেতে পারে এবং সুস্থ কোষকে ক্যানসারে পরিণত করতে পারে।"

চিকিৎসক বড়ভে এই গবেষণা প্রসঙ্গে আরও বলেন, "এই ভাবে দ্বিতীয় বার ক্যানসার হওয়ার পথ কী ভাবে রোখা যায়, তার সমাধান খুঁজতে শুরু করেন চিকিৎসকেরা। তাঁরা ইঁদুরকে রেসভিরাট্রল এবং কপার-সহ প্রো-অক্সিডেন্ট ট্যাবলেট দেন। দেখা যায়, এই ট্যাবলেট ক্রোমাটিন কণাকে ধ্বংস করতে সক্ষম হচ্ছে।" বড়ভে জানান, ক্যানসার চিকিৎসার খরচ লক্ষ টাকা থেকে শুরু করে কোটি টাকাও ছাড়িয়ে যেতে পারে। কিন্তু এই ট্যাবলেটটি সর্বত্র ১০০ টাকায় পাওয়া যাবে।

সংবাদ সংস্থা

Date: 29.02.2024

ক্যান্সার জয় করার পরেও ফের আক্রান্ত হওয়ার সম্ভাবনা কমাবে ফুড সাপ্লিমেন্ট- এইসময়, 29th Feb. 2024

ক্যান্সার জয় করার পরেও ফের আক্রান্ত হওয়ার সম্ভাবনা কমাবে ফুড সাপ্লিমেন্ট

ট্যাবলেট মিলতে পারে ১০০ টাকায়

এই সময়: মারণ ক্যান্সারের চিকিৎসায় অভিনব অগ্রগতির হদিশ মিলল ইঁদুরের উপর গবেষণায়। আশা, আগামী দিনে তা ক্যান্সার চিকিৎসায় সুস্থতার রাস্তা চওড়া করবে অত্যন্ত স্বল্প ব্যয়ে। হয়তো প্রতি ট্যাবলেট মিলবে মাত্র ১০০ টাকা দামে।

মুম্বইয়ের টাটা মেমোরিয়াল হাসপাতালের চিকিৎসাবিজ্ঞানীরা এমন একটি চিকিৎসা পদ্ধতি আবিষ্কার করেছেন বলে দাবি করছেন, যেটা ক্যান্সার সেরে যাওয়ার পরে ফের আক্রান্ত হওয়ার আশঙ্কা অনেকাংশে কমায়। ক্যান্সারের ছড়িয়ে পড়া ঠেকায় এবং কেমো ও রেডিয়েশন থেরাপির পার্শ্ব প্রতিক্রিয়া কমিয়ে দিতে পারে। তবে বিশেষজ্ঞরা এই গবেষণাকে স্বাগত জানিয়েও ওষুধটির ক্লিনিক্যাল ট্রায়াল মানুষের উপর না হওয়া পর্যন্ত বিস্তারিত মন্তব্য করতে নারাজ।

কেননা, এটি ক্যান্সার চিকিৎসার কোনও প্রথাগত ওষুধ বা ড্রাগ নয়। আদতে এটি লাল আঙুরের নির্যাস থেকে সংগৃহীত 'রেজ়ভারেট্রল' নামে একটি ফুড সাপ্লিমেন্ট ও তামার মিশ্রণ। যদিও তা ক্যান্সারের মূল চিকিৎসা নয়, সহায়ক একটি চিকিৎসা। কী ভাবে এই সাপ্লিমেন্ট ক্যান্সারের মতো মারণব্যাধিকে বাগে আনে? টাটা মেমোরিয়ালের ক্যান্সার শল্য চিকিৎসক রাজেন্দ্র বাড়ওয়ে জানিয়েছেন, ক্যান্সার ফিরে আসা এবং ছড়িয়ে পড়ার জন্য যে রাসায়নিকটি দায়ী, প্রথমে সেটি আবিষ্কার করা এবং তার পর তাকে ধ্বংস করার রাসায়নিকটি চিহ্নিত করাই তাঁদের মূল কাজ।

গবেষক দলের অন্যতম সদস্য রাজেন্দ্র বলেন, 'গত এক দশক ধরে এই কাজ করে আমরা দেখেছি, রেজ়ভারেট্রল ও তামার মিশ্রণ ক্যান্সারের রেকারেন্স (ফের আক্রান্ত হওয়া) ৩০% পর্যন্ত এবং মেটাস্ট্যাসিস (এক অঙ্গ থেকে অন্যত্র ছড়িয়ে পড়া) ৫০% পর্যন্ত কমিয়ে দিতে সক্ষম।' কী ভাবে? তাঁর ব্যাখ্যা—

এআই

'ইঁদুরের উপর গবেষণা চালিয়ে তাঁরা দেখেছেন, ক্যান্সার আক্রান্ত কোষ থেকে ক্রোমাটিন পার্টিকল বের হয়। সেটাই সুস্থ কোষকে ক্যান্সার আক্রান্ত কোষে বদলে দেয়। আর রেজ়ভারেট্রল ও তামার মিশ্রণ এই ক্রোমাটিন পার্টিকলকেই নিকেষ করে।'

গবেষকরা জানাচ্ছেন, রেজ়ভারেট্রল ও তামার মিশ্রণটি আদতে এক ধরনের প্রো-অক্সিডেন্ট ট্যাবলেট। সেটা ওরালি খেয়ে নিলে পাকস্থলি থেকেই তা দ্রুত রক্তে মিশে যায় এবং সেই মিশ্রণ থেকে নির্গত অক্সিজেন ফ্রি র‍্যাডিক্যাল শরীরে জমা হওয়া ক্রোমাটিন পার্টিকলগুলিকে ধ্বংস করে দেয়। এতেই ক্যান্সার ফিরে আসা ও ছড়িয়ে পড়ার আশঙ্কা কমে। এবং ক্যান্সারের মূল চিকিৎসা যে কেমোথেরাপি ও রেডিয়োথেরাপি, তার পার্শ্বপ্রতিক্রিয়া কমাতেও গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করে এই মিশ্রণ।

বাড়ওয়ে জানিয়েছেন, সাপ্লিমেন্ট মিশ্রণের ট্যাবলেটটি যেহেতু কোনও ওষুধ বা ড্রাগ নয়, তাই কেন্দ্রীয় ওষুধ নিয়ন্ত্রক সংস্থা সেন্ট্রাল ড্রাগ স্ট্যান্ডার্ড কন্ট্রোল অর্গানাইজেশন (সিডিএসসিও)-এর বদলে কেন্দ্রীয় খাদ্যসুরক্ষা নিয়ামক সংস্থা ফুড সেফটি অ্যান্ড স্ট্যান্ডার্ড অথরিটি অফ ইন্ডিয়া (এফএসএসএআই)-এর কাছে আবেদন করা হয়েছে অনুমোদনের জন্য। তাঁর ধারণা, ছাড়পত্র মেলার পর চলতি বছরের মাঝামাঝি প্রতি ট্যাবলেটের ১০০ টাকা দাম ধার্য করে তা বাজারজাত করা সম্ভব।

তবে তিনি এটাও জানিয়েছেন যে, ওষুধটির সুরক্ষার দিকটি ইঁদুর ও মানুষের উপর যাচাই করা হলেও কার্যকারিতার দিকটি আপাতত শুধু ইঁদুরের উপর পরখ করে দেখা হয়েছে। মানুষের উপর ক্লিনিক্যাল ট্রায়াল চালিয়ে তা পরখ করতে এখনও বছর পাঁচেক সময় লাগবে। বিশেষজ্ঞ মহল অবশ্য এখনই এই দাবিতে উচ্ছ্বাস প্রকাশ করতে চাইছেন না। তাঁদের বক্তব্য, 'আগে ক্লিনিক্যাল ট্রায়ালটা কোনও জার্নালে গবেষণাপত্র হিসেবে বেরোক। তার পর বৈজ্ঞানিক আলোচনা করা যাবে।'

টাটা মেমোরিয়ালেরই প্রাক্তন ক্যান্সার শল্য চিকিৎসক গৌতম মুখোপাধ্যায় বলেন, 'ক্যান্সার চিকিৎসায় রেকারেন্স ও মেটাস্ট্যাসিস ঠেকানো নিয়ে সারা দুনিয়ায় গবেষণা চলছে। তাই এই গবেষণাটি তাৎপর্যপূর্ণ, সন্দেহ নেই। কিন্তু এই ট্যাবলেটের কার্যকারিতা মানুষের উপর ক্লিনিক্যাল ট্রায়ালে প্রমাণিত না হওয়া ইস্তক, এ নিয়ে আলোচনা করা বৃথা।' একই সুর হেমাটো-অঙ্কোলজিস্ট প্রান্তর চক্রবর্তীর গলায়। তাঁর কথায়, 'রেজ়ভারেট্রলের গুণাগুণ নতুন নয় চিকিৎসাবিজ্ঞানে। কিন্তু মেটাস্ট্যাসিস ও রেকারেন্স ঠেকানোর বিষয়টি হিউম্যান ট্রায়ালের আগে বোঝা যাচ্ছে না। তবে এটা যেহেতু একটি ফুড সাপ্লিমেন্ট, তাই ক্ষতিকারক কিছু হবে না। কিছু মানুষেরও যদি এ থেকে উপকার হয়, তা হলেও এটিকে একটি যুগান্তকারী আবিষ্কার বলব।'

THE ASIAN AGE
Delhi | Mumbai | Kolkata | London

Date: 29.02.2024

Man with cancer jumps before Delhi Metro train, dies- The Asian Age, 29th Feb. 2024

Man with cancer jumps before Delhi Metro train, dies

AGE CORRESPONDENT
NEW DELHI, FEB. 28

A 39-year-old man, who had been diagnosed with cancer, allegedly committed suicide by jumping in front of a train that was approaching a station on the Delhi Metro's Yellow Line on Wednesday, according to officials.

Services were delayed for about 35 minutes on the corridor after the incident that took place at Udyog Bhavan Metro station, a senior DMRC official said.

According to the Delhi police officials, the man was upset due to his "illness', though "no suicide note was recovered".

A PCR call about the incident was received at Rajiv Chowk police station. A team reached the spot and on enquiry and after seeing CCTV footage, "it was found that the person had committed suicide" by jumping in front of the train at around 11:30 am at the station's platform number 2, the police officials said.

His wife told the police that her husband, a resident of Delhi's Mukundpur area, was earlier working as a painter, but "since he was suffering from cancer he was not working due to his illness". The body has been shifted to the RML hospital. Inquest proceedings under section 174 of the CrPC (unnatural death) is underway, the police said.

A mobile number written on a slip was recovered from his pocket, they said. The body has been sent to a mortuary for post-mortem. His wife also told the police that he was under treatment from a leading hospital and he recently underwent a surgery.

The train was going to Vishwavidyalaya station, the DMRC official added.

February 2024

Newspaper Clips

Chittaranjan National Cancer Institute

Central Library